Shri Hari

Core Mota Mandir : Pracheen Sewa Kram
(Old Photo Copy)

Following is the incalculable wealth
I have received from my
Respected Parents and Respected Mukhiyaji.

Goswami Gokulnath

न· अरोगावने सुरू करे है मेवानजो आरोगे हीहै ४ भातव
३८ टत्ती करने आपकी आज्ञासुं गोकलेशजीने लिख्यो है
दहीभातके चोरवा ऽ१ दही ऽ४ खांड ऽ२ घंटीभात
न· बड़ीभातके चोरवा ऽ१ मि· पो· न· ६ घं· १६२१

लिख्यो है हंडीनलड़ाको दूध ऽ५ बूरा ऽ।।। घरकी के

मरी न· पेडासुपेदको दूध ऽ५ बूरा ऽ१ केशर मासा २
मीठे कूटाको दही नाको दूध ऽ२ बूरा ऽ= दूधपूरी मला
ईको दूध ऽ५ बूरा ऽ। मेवा मिठाईकी थाल खांड सेर ऽ२
संजावकी खीरिको दूध ऽ४ बूरा ऽ१ सुगंध मासा ४
चनको रखा ऽ= ।।याहीमे न मंगलानेलेके गोपालवल्ल
भ न· सेनके बंटा नंईवाज भोगयाहीमेने आरोगे ।। स
खड़ीमे आरबो पाटीया सेवको आरोगे सेव ऽ१। तामे
घृत ऽ। बूरा ऽ।। जनिकूटा नघाधोवादार न· पापड़ न·
तिलवड़ी शाकपत्र और मेवा भातकरनो नव
नीत प्रीयाजीके हांतो नहीं हैं नहैं अपने इहां मनोरथ
संकरे है चोरवा ऽ। बूरा ऽ२ मेवा न· पादुकाजीवि
राजत होई नवसखड़ी न· अन सखड़ी सब जुदी थार आ
वै और जो आवत होई सोई न· तिलगड मिलाईके दू
धको ऽ बूरा १ पादुकाजीको जुदो भोग आवै फेर धूप
दीप तुलसी श्रीठाकुरजीके हांसमर्पिये संखोदिक

ठाकुरजीके हांकरिके पादुकाजीके भोगपर एकलो संखो
दिककीजे देरादे बाहिर आइ समयभरे भोगसराय आच
मन मुखवस्त्र कराय बीड़ा ४ धरि पादुकाजी जहां बिरा
जत होंई तहां भीतिहरजीको चोक करिये फेरि झारी
भरि मालासबठोर पहराय दर्पन दिखाइ दंडवत करु
ले आरती मोतीकी तामें बत्तिको दीवड़ा बाती १६
मुठीया ४ धरि ठाकुरको आरती करिके हाथ धोई
पादुकाजीको तिलक कीजे अक्षत लगाईये बीड़ा २ ध
रीये कुंमकुंम लगाइके फेरि मुठीया ४ वारीये और
आरती करीये पादुकाजीको दंडवत कराय राईलोंन न्यो
छावर करीये हाथ धोय ठाकुरजीको दर्पन दिखाइ
माला ठाकुरजीकी बड़ी करीये और बीड़ा २ ठाकुर
के बंटामे आधिक धरीये न बीडी ४ सैयापास ठाकुर
कीत बकडेमे आधिकी धरीये फेरि अनोसर करीये
कार्तिकवदी १२ मे श्रीगिरधरजीको उत्सव तादि
नाश्री ठाकुरजीको तिलक बीड़ा २ बड़े तथा छोटे ४
दूसरे स्वरूपके तिलक ॥ इति द्वादसीकी विधि समाप्तम्
मार्गसिर वद १ ते गोपमहीनाकी सामग्री तथा धनु
मासकी सामग्री नित्य फिरती आरोगे ॥ मार्गसिर वद
प्रतिपदा ते गुड़ आरोगे और खीचड़ी आरोगे मंगल

न॰ ३९ वार आदित्यवार न॰ एकादसी न॰ द्वादसी न॰ पून्यो
न॰ अमावस कोरवीचड़ी नहीं आरोगे बेगनभात
बड़ीभात एकदिनाबीचबीचमें आरोगनतांई और
एकादसी द्वादसी पून्यो अमावस आदित्यवार मंग
लवार इनदिनकों तोभातकोंथार आवे कछुमंगला
में खीचड़ी आरोगे [illegible] मागसिरवदी २ मार्ग तादि
नते धनुमास सोसांभेंगतो आखेदिन आरोगे और
अप्राल्पसुख न॰ रुईके वस्त्र डोलतांई पेहेरे प्रेमसों
आश्रीनाथजीके उत्सवतांई फागुनवदी ७ तेफेर
नहीं तादिन पाछे मुकुटको शृंगार होई सोजहांतां
ई रंगीन वस्त्र धरे तहांतांई जबसुधेन पीछोड़ा धरें ग
रमीपड़े तो श्रीमहाप्रभुजीके उत्सव तेजनेधरें नहीहे
इतो अप्रसय अजीया तेजो पिछोड़ा धरे यह रीत मा
र्गसिरवद १ गोपालवल्लभमें मनोहरके लडुवा
कोमेदा ऽ२॥ चोरी [illegible] ऽ३॥ खांड ऽ१।
आखेदिनको बालभोग मंगलाभोग तलेकेसनके
घंटातांई याहीमें ते आरोगे न॰ गोपालवल्लभयाही
में ते आरोगे सुगंधतोला आध मिश्री ऽ। किसामि
स पैसा ४ भर सुगंधमासा ६॥ मागसिरवदी॥२॥
आखेदिनकी सामग्रीतिलसांकरी आरोगे मेदा ऽ३॥

घृत ऽ३॥ बूरा ऽ३॥ ॥मागसिरवदी ॥३ ॥ आरबोदि
नकीसांमग्री मठड़ीकीबालभोगसुद्धा मेदा ऽ३॥ घृ
त ऽ३॥ खांड ऽ३॥ ॥मागसिर वदी ॥४ ॥ सांमग्री
दहीघेराकी आरबेदिनकी दहीकेमनोहरकेल
डुवा संबत १७७४ मे सानोरवदल्ल बीनवनी
प्रियाजी छप्पनभोग कोमनोरथकरचो श्रीदाऊजी
नेतासो सांमग्री हांडीमलड़ाकोदूध ऽ५ बूरा ऽ१
मीठे शाककी खांड़ ऽ॥ सरबड़ीमे सेव ऽ॥= घृत
ऽ= बूरा ऽ१। आधोपाटीया मेदा ऽ३॥ घृत
ऽ३॥ खांड़ बूरा ऽ३॥ सुगंधमासा ४ ॥मागसिर
वदी ॥५॥ सांमग्री फेनीकी आरबेदिनकी मेदासे
र ऽ२॥ चोरीठा ऽ१। घृत ऽ३॥ खांड़ ऽ३॥ मा
गसिर वदी ॥६॥ आरबेदिनकीसामग्रीबूंदीकेल
डुवाकी बेसन ऽ३॥ घृत ऽ३॥ खांड़ ।ऽ१। मि
श्री ऽ। दारव पैसा ४ भर सरवड़ीमे नम्बरकीदा
र आरोगे ॥मागसिरवदी ॥७॥ टीकेत श्रीगि
रधरजीकेभाई श्रीगोविंदलालजीकेलालजी
श्रीगोकुलनाथजीको उत्सव अपनेयहांन
हीमांन्योजाय सांमग्रीउपरेठाकी आरबेदिन
की मेदा ऽ२॥ चोरीठा ऽ१। घृत ऽ३॥ सुगंध

न-
४०

मासा ६॥ मागसिर वदी॥ ८॥ [illegible] श्रीगोविंदरायजीको
उत्सव॥ सामग्री आरवेदिनकी मीठी कचोरी। आगली
दार ऽ३॥ घृत ऽ३॥ खांड ।ऽ१। मिश्रीकोनवा
ऽ॥ न- हांडी मलुडा दूध ऽ४ बूरा ऽ॥ सुगंधी
मासा ४ ॥ मागसिर वद॥ ९॥ सामग्री [illegible]की
आरोगे॥ आरवेदिनकी कूरसेर ऽ२ मेदा ऽ३ [illegible]
खांड सेर ऽ२ पागिवेकी खांड ऽ३॥ घृत कूरभुजिवे
को न- गंला भुजिवेको ऽ३॥ ॥मगसिरवद॥ १०॥
सामग्री सकरपाराकी आरवेदिनकी॥ वेसन ऽ३॥ घृ
तऽ३॥ खांड ऽ३॥ मगसिरवद॥ ११॥ सामग्री
आरवेदिनकी मगदकी॥ वेसन ऽ३॥ घृतऽ३॥
बूरा ऽ४॥ मगसिर वद॥ १२॥ सामग्री आरवे
दिन पपचीकी मेदा ऽ३॥ घृत ऽ३॥ खांड ।ऽ१।
चोरीठा ऽ। चोकी सामग्री खीर बड़ाकी सखड़ी
मेघुजी ॥ मगसिरवद १३ बड़े श्रीघनश्यामजी
कोउत्सव॥ वस्त्र पीरे [illegible] उत्सवके श्रीम
स्तक पर कुल्हे न- टिपारो धरे सामग्री मोरवन
वड़ाकी आरोगे मेदा ऽ२। चोरीठा ऽ॥ घृत ऽ३॥
बूरा ऽ३॥ मोरवन ऽ। हांडी मलुड़ा को दूध ऽ४
बूरा ऽ१ मोरवनको दूध ऽ२॥ मगसर वद॥ १४॥

सांमग्रीसेवकेलडुवाकी आरोगे दिनकी मेदा ऽ ३॥
घृत ऽ ३॥ खांड ऽ ७॥ मिश्रीको रवा ऽ =॥ मगसर
वदी ॥ ३० ॥ ऽमावस ॥ सांमग्रीदेहरवड़ीकी आरोगे
दिनकी मंगलभोग सरवड़ी आरोगे टीकेतको
श्रृंगार ऽ मावसको मड़वानको आजोदिनदेखिके
मंगलभोग आरोगावनो मेदा ऽ १॥ चोरोठा ऽ १।
घृत ऽ ३॥ खांड पागिवेकी ऽ १। वध्योदहीको
दूध ऽ २ मंगलभोगमे सरवड़ी आरोगे मेदाकी
रोटी मेदा ऽ २ घृत ऽ॥ संजावकी खीरिको दूध
ऽ ४ बूरा ऽ १ सुगंध मासा ४ वेगनकोभरता नं-
चकता नं-कचरीया पापड नं- उड़दकीरोटी
कोकोरमा ऽ १ तेल ऽ १ नं- उदकीरोटीतिलके
पलोथनकी कोरमा ऽ १ तिल ऽ। चूनअथवाकी
मेरोटीकोगुड ऽ॥ मार्गसिर सुदी ॥ १ ॥ सामग्रीवा
वरकी लगरेदिनकी टीकेतको श्रृंगार मंगलभोगवदमेन
हीसुदमे करनों मावसके दिनदेखिके मंगलभोगदोयक
रनो अथवा १ करनो मगसिरसुदपडवा सांमग्री आरो
गेदिनकी वावर आरोगे मेदा ऽ ३॥ घृत ऽ ३॥ बूरा ऽ ३॥
सुगंध मासा २ मंगलभोगकी सरवड़ीकी सांमग्री आ
रोगे मेदा ऽ १ तेलकी पूरी पापड़ वड़ी कचरीया वेंगन

न॰ ४१ कोभरना घृत ऽ।। मेवाभातकेचोरवा ऽ१ मिश्री ऽ। बूरा
ऽ४ उर्दकोरवा ऽ १ मूंगकोरवा ऽ।। गुड़ ऽ।। मार्गसिर
सुद ।।२।। सामग्रीगुजरातीखाजाकी आरबेदिनकी
मेदा ऽ३।।। घृत ऽ३।।। भरकायबेकोबूरा ऽ३।।। मार्गशि
रसुद ।।३।। सामग्रीरोटकेमगदकी आरबेदिनकी
मेदा ऽ३।।। घृत ऽ३।।। बूरा ऽ३।।। मार्गशिर सुद ।। ४
सामग्रीसरवोरीकी आरबेदिनकी मेदा ऽ३।।। घृत ऽ३।।।
बूरा ऽ७।। सुगंधमासा ४ ।। मार्गशिर सुदी ।। ५।।
गोस्वामीश्रीजीवनलालजीमहाराजकोजन्मदिवस
सामग्रीमिलमा बेसनकेमगदकी आरबेदिनकोबे
सन ऽ२ मेदा ऽ१।।। घृत ऽ३।।। बूरा ऽ।।। सुगंधमा
सा २।मार्गसिरसुद ।। ६ टीकेतके श्रृंगार सामग्रीतवा
पूरीकी आरबेदिनकी चणाकीदार ऽ३।।। मेदा ऽ३।।।
घृत ऽ३।।। खांड ।ऽ१ सुगंधमासा १२ कटेरीको
बूरा ऽ।। आधिकी घृत ऽ।। कटेरीकोमिश्रीकीन
वापरीकेरवा ऽ।।। मार्गसिरसुद ।। ७ ।। वडेश्रीगो
कुलनाथजीकोउत्सव ।। वस्त्रपीरेनीवस्त्राभ्रूतज
सके श्रीमस्तकपर कुलह न-टिपारो सामग्रीकप्र
र नाड़ीकी सगरेदिनकी मेदा ऽ३।।। घृत ऽ३।।। मिश्री
कीबुकनी ऽ७।। चोरेठा ऽ१। जोगनग ७७५ सुगं

धमासा १२ प्रीकेठिकानेबड़ा पिठो ऽ।। हांडीन
मलड़ाको दूधसेर ऽ५ बूरा ऽ २।।मगसिर सुद।।
सानोस्वरूपश्रीजीकेघर श्रीनवनीतप्रियाजीकेमेले
श्रृंगारेगे हतेसिहासनमेताको सांमग्री सवत १७८६
सवइगीने श्रीविठलरायजी सेवकोयाटोपाग्रा
धो सेवकोमेदा ऽ।। घृत ऽ= बूरा ऽ१ बासोदीकेदू
धऽ२।। बूरा ऽ।।= सांमग्रीदहीबड़ाकोसगरोदिन
कोमेदा ऽ २। चोरीठा ऽ १।। घृत ऽ ३।। खांड़ ऽ ९
सुगंधमासा १२ चपटीया खाजा।।मगसिरसुद।।
सांमग्रीचूरमाको सगरेदिनकी काठेकोचून ऽ ३।।
गोठवां हांडीमलड़ाकोदूध ऽ ५ बूरा ऽ १ पागकी
सगरेदिनकी मेदा ऽ ३।। घृत ऽ ३।। खांड़ ऽ ३।।
सुगंधी मासा २।।मागसिर सुद।। सांमग्रीचूरमाको
सगरेदिनकी काठेकोचून ऽ ३।। घृत ऽ ३।। बूरा
ऽ ५।। ।।मार्गशिरसुद।। ११ गोपालवल्लभमेसेव
केलड़ुवा मेदा ऽ।। घृत ऽ।। खांड ऽ १।। मगशिर
सुद।। १२।। गोपालवल्लभमेचोरीठाकोसगरोचो
रीठा ऽ।। घृत ऽ।। बूरा ऽ १।। सुगंधमासा ४ चो
कीसांमग्रीबड़कानकी बड़ीनिलबड़ीदबरीपापड़र
सोईमे सूरजरोटी।। मगशिरसुद।। १३।। =प्यारवेदिन

न. कोचंद्रकलाकीसांमग्री मेदासेर ऽ३ घृतऽ३ खांड ऽ६
४२ तथाचोकीश्रृंगारेगे ॥मार्गसिर सुद ॥ १४ ॥ टीकेतकोश्रृं
गार सांमग्रीवड़ाकी ॥ चोकी दूधसेर ऽ२ चोखासेर ऽ३
घृत ऽ३ बूरासेर ऽ३ सुगंधमासा १० ॥मार्गसिरसुद॥
१५॥ नागजीश्रीहरिरायजीकेउत्सव गोपालवल्लभ
मेजलेबी मेदाना चोरीठा ऽ॥। घृतसे ऽ॥। खांड ऽ२।
दोऊबेरकीभरमापूरी मेदासेर ऽ१ वेसन ऽ॥ घृत
ऽ१॥ तथांहरदी मिरचहींग न. नींबकोरस न. श्रा
दा इत्तनीवस्तु तथांजोनभई होय सोमीठीसांम
ग्रीहोय ॥ पौषवद ॥ १ ॥ गोपालवल्लभमेबूंदीकी
उरापापड़ी वेसनसेर ऽ॥। घृत ऽ॥। खांड ऽ२। ॥पौ
षवदी ॥ ३। गोपालवल्लभमे मनोहरकेलडुवा मेदाचो
रीठा सेर ऽ॥। घृत ऽ॥। खांड ऽ३ सुगंध मासा २
पौषवदी ॥ २ ॥ गोपालवल्लभमेसेवकेलडुवा मे
दा ऽ॥। घृत ऽ॥। खांड ऽ१॥ पौष वदी ॥ ४ गोपा
लवल्लभमेदहीकोमनोहर दहीकोदूध ऽ२ लडुवा
मेदा चोरीठा ऽ॥। घृत ऽ॥। खांड ऽ३ सुगंधमासा २
पौष वदी ॥ ५ गोपालवल्लभ वेसनकीउड़पापड़ी
वेसन ऽ॥। घृत ऽ॥। उड़ ऽ॥। पौष वदी ॥ ६ गोपा
लवल्लभमेछटनाबूंदी वेसन ऽ॥। घृत ऽ॥। खांड ऽ॥।

पौषवद ॥ ७ ॥ गोपालवल्लभमेखोवाकोमनोहर
दूध सेर ऽ४ कोरखोवा चोरीठा ऽ॥। घृत ऽ॥। खांड
ऽ३ सुगंधमासा २॥ पौषवदी ॥ ८ गोपालवल्लभ
मेमेवाटीके लडुवा मेदासेर ऽ॥ सेवा ऽ। मिश्री
ऽ॥। पागिवेकोखांड ऽ॥। घृत ऽ॥। पौषवदी ॥ ९
श्रीमद्‌ [illegible] ॥ प्रथम
ग वस्त्र पीरे नीबुआ श्रुतजसके दरियाईके
किनारीरुपेरी वागाचाकदार लालदरियाईकी सु
थनपटकालालकुलहीकेसरी सुतरुकी मोजाभी
तरेवस्त्र दोऊ लाल श्रीबालकृष्णजीकोवागाकी
श्रुतजसको नीबुआ कुलही केसरी सुतरुफरगुल
चेवलीको न-नयोगदजड्चेवलीको केसरी पडुका
जीको रजाईचेवलीकी नीबुआवाकेसरी मंदिरमेसा
जजन्माष्टमीकेबंधे द्वारपे नईबंदनमाला बांधनी पा
दुकाजी [illegible] सामग्री जले
वीकी श्रीआवेदिनको न-गोपालवल्लभमेंकी जलेबी
कोमेदा ऽ३॥। घृत ऽ४ खांड ऽ२। वंदोधइनो बेसन
ऽ१॥ घृत ऽ१॥ खांड सेर ऽ१॥ सिखरनवडीकी पीठी
मिलवा ऽ। पागिवेकीखांड ऽ१॥ सिखरनकोदही
ऽ२ नांमेवूरा ऽ२ सुगंधमासा ४ छाछकेवडाकी

न- पिठ्ठी ऽ।। घृत ऽ। मीठेशाककीखांड़ ऽ।। मेवामिठाई
४३ कोथालसवतर हको पैसाचारिचारिभरि नाकीखांड़
सेर ऽ२ नांमेत्तिनगिनी न-सठेलो न-साबूनो न-
रेवड़ी न-इलाइचीदाणा न-गालारपाककीकनली
दूधघरकोसामग्री।।पड़दायनरहक दूधसेर ऽ५ व
रा ऽ१ सुगंधमासा ४ केसरमासा ४।।वासोदोहनरहको
दूधसेर ऽ५ वूरा ऽ१ सुगंधमासा ४।।वासोदोहनर
हको।। दूधसेर ऽ५ वूरा ऽ१ सुगंधमासा ४ केसर
मासा ४ हांडीमलड़ाको दूध ऽ५ वूरा ऽ।।। दूधपू
रीनयांमलाईमिजीके दूध ऽ८ नामेवूरामुरका
इवेको ऽ।।। मीठेकूंडाकेदहीको दूधसेर ऽ१ नांमे
वूरा ऽ। संजावकोरबीरि दूध ऽ४ नांमेवूरा ऽ१
सरवड़ीकोविधिगोपीवल्लभमे पारकेठिकानेसे
वको=प्रारवोपाटीया=प्रारगे सेवकोमेदा ऽ१।।= डो
टोपाटीया वूरा ऽ३।। घृत ऽ।। राजभोगमेधोईदार
नित्यनसेर ऽ।। वटलो चौरवा ऽ२ वड़ीन-पापड़न-
तीनकूंडानिजवड़ीन-मिरचवड़ी न-कचरीया मी
ठेमानकेचोरवापरबी ऽ।। नामेमेवा ऽ। मिस्रीको
करगी ऽ= नांमेवूरा ऽ२ नांमेकेसरमासा ४ नेल
ऽ१ मीठो =प्रपनेयहांमेवाभातकस्योहै महाराजने

परंतु सं-१९२१ के पोषवदी ९ सोपांचोभात आ
रोगावने श्रीजीमहाराजने सुरू करेहै सदामत्तदही
भातके चोरवा ८॥ सिखरनभातकेचोरवा ८॥ वर
१२ होतरकोदही ८४ खट्टेभात त-बडीभात हो
ऊनकेचोरवा ३१ श्रीनवनीतप्रियाजीके पासं भोग
भातनहीं पावोतहै जन्माष्टमीको न-राधाष्टमी
को न-अन्नकूटको ये तीनु उत्सव कोमेवाभात आ
रोगे यहरीतिहै ॥ श्रीपादुकाजी न-हस्ताक्षर विराजन
होइत्तो ॥ हरदीकोचोकपूरिये पलगड़ीकेनीचे
न-भोगकीचोकीकेफेर जुदेभोग आवे सखरा
खड़ी न-अनसखड़ी झारीभारिधरीये एकडव
रामें दूध गरम कारिवामे गड़त्तथांतिलमिलाइ श्रा
मिजाइधरीये जलसोसर्वत्रठाकुरकेभोगमे सम
र्पि फेरेसंखोदक ठाकुरके भोगमेकरिके फेरे पादु
काजीकेभोगकोकरनो धूपदीपकरिदेगदेबाह
र आइये समयभयेभोगसराय आचमनमुख
वस्त्र सबठोर कराय पादुकाजीकोआचमनमुख
वस्त्रकराय बीड़ा ४ धारिकेमंदिरमे पादुकाजीकीप
लगड़ी कोचोकभीजीहरदीकोकरीयेपलगड़ीपरप
धराइये ठाकुरकोमालापहराय बीड़ा २ आधिकी

न० ४४ बंटामेधरने बीड़ा ६ सैयापासधरने फेरेआरसीदि
खाइआनीमोत्तीकीचंनकोदीवड़ाधारिकरीये फेरेहा
यधोयआरसीदिखाईमालावड़ीकरिकेश्रीपाडुका
जीकोमालाजोपेहेलेईपहराईहै फेरप्रसादीआरती
उलरघरा[illegible]पादुकाजीकेतिलककरीये फेरवी
ड़ा२ कुंभकुंमलगाइधरीये फेरमुदीया४वारेआ
रतीकरिन्योछावरकरीये फेरेमालाबीड़ाउत्थापनभ
रेपादुकाजीकेउठे धनुर्मासकीसांमग्री मार्गसिरवद
१ मारुमीतीसोसगरेदिनकोबालभोगआरोगेसो
मंगलाकेभोगतोनित्यतेदूनेआरोगे ओरधनुर्मास
मेजादिनाखनमंडाकीचोकीहोय्य तादिनावस्त्रकि
रमजीरंगकेखीनखापकेसुनेरीकलावत्तकीबूंटीके
नयांश्रीमस्तकऊपरहिराकोटिपाराधरे ओरजादि
नामांडाकीचोकीहोई तादिनाहूवस्त्रखीनखापके
रंगकीधरतीतामेबूटीसुनेरीकलावत्तकीश्रीमस्तक
परपागहीराकोधरे ओरजादिनानवाप्ररीकी
चोकीहोइतादिना

जादिनाअभ्यंगहोई तादीनाआदानीलीटीआवे
* तीजेअभ्यंगहोय्य तादिनागुड़कीलीटीआवे

पोषवदी॥ १० ॥ गोपालवल्लभमे सिराकीसामग्री काठेचूंनकोरवा सेर ऽ॥। घृत ऽ॥। खांड ऽ १॥ पौषवदी॥ ११ ॥ टीकेतश्रीगोविंदरायजीको उत्सव वस्त्र जुपेनकेश्याम कीमखाप अटेरी कलाबत्तूकी बूंटीको श्रीमस्तक पे पन्नाकी कुलह धरें गुरसखरूं जलेबी गोपालवल्लभमे मेवासेर ऽ॥ घृत ऽ॥। खांड ऽ २। ॥ पौषवदी ॥ १२ गोपालवल्लभमे लडुवा लारवनसाईको बेसन सेर ऽ॥। घृत ऽ॥। खांड ऽ २। बूंदी पाडके ताको पीसिके फेरि खांडके चासनीमे नाखके सुगंधमासा २ मिलाइके बांधने

चोकीरवनमंडा रसोईमे ठ्ररा पोली

पोषवदी॥ १३ दादाश्रीगोकुलनाथजीको उत्सव जन्मदिन ताद्दिन गोपालवल्लभमे जलेबीको मेदा ऽ॥। घृत ऽ॥। खांड ऽ २। सुगंधमासा २ मिलाइ धरने पोषवदी॥ १४ गोपालवल्लभमे सामग्री भारीकी चोरीठाको चून ऽ॥। ताको दूध ऽ २ मेनारवके दूधको फाडनो फेरि वाके वडा नग २० फेरवाके उपर ठ्ररा भरकावनो ठ्ररा ऽ॥। घृत ऽ॥। पोषवदी ३० ॥ ऽ मावस्या सामग्री मरवीकी गोपालवल्लभमे उर्दकी पिठी ऽ॥= चोरीठा ऽ= येदोनोनको स्कहेल

न-
४५

रिकेजलेबीकी सीतरह छंनामेछेदकरिके भूजनी ध
नमेफेरिकाढिके बूराभुरकावनो घृत ऽ।।। खांड ऽ१।।
कीचासनीमे पागनी ॥ पोषसुदी ॥ १॥ गोपालव
ल्लभमे सांजनकी गाडीकी उड़दकीपिठी ऽ।।= चोरी
ठा ऽ= घृतोंनीनकोई कछुकरिके जलेबीकीसीतरह
छंनामेछेदकरिके तलकेजनी फेरबाहिरकाढिके ऊ
पर बूराभुरकावनों घृत ऽ।।। बूरो ऽ।।। सुगंधमासा २
पोषसुदी ॥ २ मुंगसेकबेकोमगद गोपालवल्लभमे
मुंगसेकबेकोमगद ऽ।।। घृत ऽ।।। बूरा ऽ१ सनवाकी
सीतरह मिलावनो ॥ पोषसुदी ॥ ३ गोपालवल्लभ
मेमबाटीकेगुंजा मेदासेर ऽ।।। घृत ऽ।।। मेवा ऽ१ मि
श्री ऽ।।। पागिवेकी खांड ऽ१॥ सुगंधमासा २॥ पोष
सुदी॥ ४॥ गोपालवल्लभमेधांसके लडुवा धास ऽ।।=
चोरीठा ऽ= घृत ऽ।।। पागिवेकी खांड ऽ३॥ पोषसुदी॥
५ गोपालवल्लभमे खोवाकेगुंजा खोवा ऽ४
मिश्रीकीकरनी मेवा ऽ= मेदा ऽ।।। घृत ऽ।।। पाग
वेकी खांड ऽ।।। सुगंध मासा २॥ पोषसुदी ॥ ६॥ गो
पालवल्लभमे मेदाकोसीरा मेदासेर ऽ।।। घृत ऽ।।।
खांड ऽ१॥ पोषसुदी॥ ७॥ गोपालवल्लभमेसो
मगनी सेतके लडुवाकोमेदा ऽ।।। घृत ऽ।।। खांड ऽ१॥

बूरा ऽ१॥ पौषसु-९ गोपाल-गुड़कोसीरा चुन ऽ॥। घृत ऽ॥।

पौषसुदी ॥ ८ ॥ गोपालवल्लभमेचोरीठाकोमगद

चोरीठा ऽ॥। घृत ऽ॥। गुड़ ऽ॥। पौषसुदी ॥ १० गो

पालवल्लभमेगुड़कीबूंदीकेलडुवाको बेसन ऽ॥।

घृत ऽ॥। गुड़ ऽ१॥ ॥पौषसुदी ॥ ११ गोपालव

ल्लभमेगुड़पापड़ी मेदा ऽ॥। घृत ऽ॥। खांडसेर १

गुड़ ऽ॥। ॥पौषसुदी ॥ १२ गोपालवल्लभमेलाल

खांड़केचरमा चुन ऽ॥। घृत ऽ॥। लालखांड़ ऽ१॥

पौषसुदी ॥ १३ गोपालवल्लभमेबेसनकीगुड़पा

पड़ी बेसन ऽ॥। घृत ऽ॥। गुड़ ऽ१॥पौषसुदी ॥ १४

गोपालवल्लभमे सिखोरीआरोगे।मेदा ऽ॥। घृत

ऽ॥। बूरा ऽ१॥ ॥पौषसुदी ॥ १५ मकरसंक्रान्तिजा

दिनमकरसंक्रान्तिहोई तबपेहलेदिनभोगीहोइ

गोपालवल्लभमेबूंदीकेलडुवाकोबेसन ऽ॥= घृत

ऽ॥। खांड ऽ२। मीठेमगदकीखांड़ ऽ॥ छाछकेब

ड़ाकीपीठी ऽ। घृत ऽ= सखड़ीमे धरेकोठकानेवी

लोआरोगे बेसन ऽ१ सेवको पाटीयाआधोमेदा ऽ॥

घृत ऽ= बूरा ऽ१ भोगीकेदिनभातकीथालकेछिकां

नेवीलाआरोगे गोपीवल्लभमे मकरसंक्रान्तिकेदिन

वस्त्रइछतामेआवे नेसेघरावने श्रृंगारनित्यको संक्रान्त

रात्रकोहोइतो सवारेमंगलामेतिलकेलडुवाआरोगे

न- ६६ सोश्रृंगारभोग न-गोपीवल्लभ न-राजभोगमेंआरोगे
और पराप्कालहोय नवमंगलामेतिलवेलडुवाआरो
गे॥माघवदी॥१ गोपालवल्लभमेगुड़केपुवा चूनसेर ऽ॥।
घृत ऽ॥। गुड़ ऽ॥। न-सखरजरीटीआरोगे मकरसंक्रा

तिहोई वादिना माघकोअंगार तिलरुपैर ऽ४॥
नामरखोड़ ऽ२॥ सुगंधमासा १ बड़ेनग ४० छो
टे नग ४० मीठेशाककीखांड़ ऽ॥ सखड़ीमेसातधा
नकोखीचड़ा सेर ऽ४ सेवकोपाटीयाआधोमेदा
सेर ऽ॥= घृत ऽ= बूरा ऽ१। मकरसंक्रान्तिलगेपाछे
२० घड़ीतांईपराप्कालहै सोरात्रिमेजवसंक्रान्ति
लगे नवमंगलामेतिलवा न-राजभोगतांई न-बंटा
मेहु आरोगेहै सोसेनकेबंटामेहु आरोगे धूपदीप
संखोदिकहोय पराप्कालकेअनुसारआरोगावनो
माघवदी॥२ गोपालवल्लभमेगुड़केमालपुवा चून
सेर ऽ॥। घृत ऽ॥। गुड़ ऽ॥। ॥माघवदी॥ ३ गोपालव

ल्लभमेघूली मूंगकी आरोगे सखड़ीमेचूनकोरबा
ऽ॥। घृत ऽ॥। खांड़ ऽ॥। वेढमी तवरकीदार ऽ॥। घृत
सेर ऽ॥। खांड ऽ१। ॥माघवदी॥ ४ टीकेतकोश्रृंगा
र बरूकरमजी रंगके खीनखापके श्रीमस्तक
पेटिपारो हीराको सामग्री खनमंडाकी आरबेढ

नकी मेदा ऽ३।।। घृत ऽ३।।। बूरा ऽ१। पेहेलोदिननी

जकेदिना संध्याभोगमे न थांसेंनमें वंटामे दूसरेदि

न मंगलाभोग न· गोपालवल्लभमे न· राजभोगनां

ई ।।माघवदी ।। ५ गोपालवल्लभमे सदीयाकोचूरमा

मेदाकी पूरीके ठिकाने कचोरीकीपूरीकीसंचूर

माको सेर ऽ।।। घृत ऽ।।। खांड ऽ१ उर्दकीपिठी ऽ१

कचोरीकोमेदा ऽ।।। कचोरीभुजिवेको घृत ऽ।।।

माघवदी ।। ६ गोपालवल्लभमेनवापुरी चणा

कीदार ऽ।।। मेदा ऽ।।= घृत ऽ।।। बूरा ऽ२। माघ

वदी ।। ७ ।। गोपालवल्लभमे बूंदीके लडुवा वेसन ऽ।।=

घृत ऽ।।। खांड ऽ२। गुड़ ऽ।।। माघवदी ।। ८ टीके

न श्रीदाऊजीको जन्म उत्सव बूंदीछटवा वेसन ऽ।।

खांड ऽ।। घृत ऽ।। खिरबरनवड़ीकी पिट्ठी ऽ= घृत

ऽ= पागिबेकी खांड ऽ।। खिरबरनसेर ऽ१ बूरा

सेर १ घृत ऽ= मोठ साककी खांड ऽ।। हांडीमल

ड़ाके दूध ऽ४ मांमे बूरा ऽ।।। खीरको दूध ऽ२

अधिकीमे मांमे बूरा ऽ।। सरवड़ीमे सेवकोपाटी

या आधो मेदा ऽ।।= घृत ऽ= बूरा ऽ२। छड़ीयल

दार न· तीनकूटा न· पापड़ वड़ी न· कचरीया उत्स

वमे गोपालवल्लभ करनो और कछू नहीं

न- ४७ माघवदी॥ ९ गोपालवल्लभमे गुड़केगेंदाआरोगे कूर ऽ॥।
मेदा ऽ॥। घृत ऽ१ गुड़ ऽ१ ॥ माघवदी ॥ १० गोपाल
वल्लभमेनवापूरीगुड़की चरणाकीदाल ऽ॥। मेदापाव
ऽ॥= गुड़ ऽ॥। खांड ऽ॥। घृत ऽ॥। सखड़ीमेबीला
तथां टोकलाआरोगे॥ माघवदी ॥ ११ गोपालवल्लभ
भमेगुड़कीबूंदीकेलडुवा तथांगुड़पापड़ीबूंदीको गु
ड़कीबूंदीकोवेसन ऽ॥। घृत ऽ॥। गुड़ ऽ१ खांड ऽ१
माघवदी ॥ १२ टीकेतकोश्रृंगार सांमग्रीमुड़की मे
दा ऽ३॥। घृत ऽ३॥। बूरा ऽ८ खांडकोरस ऽ२ कां
तीवड़ाकीपिठी ऽ१ घृत ऽ१ खांडकोरस ऽ४ ति
लसांकरी चोरीठा ऽ१ तिल ऽ= घृत ऽ१ पेहेले
दिन सेनके बंटातेलेके दूसरेदिनमंगलातेसेनकेबं
टानांई ॥ पोरवस्त्र खीनखापके हरेसुनेरीबूंटीके
श्रीमस्तकपेपाग हीराको ॥ माघवदी ॥ २३ गोपा
लवल्लभमे सांमग्रीलीजीको वेसनपाव ऽ॥। घृत
ऽ॥। दूध ऽ५ नांमेवामकाको फेरवाकेबड़ा
करिके घृतमेभुंजने ताकेऊपरबूरा ऽ॥। उपकाराये
को याकोनांमजीलीकीसांमग्री॥ मांघवदी ॥ २४
गोपालवल्लभमेचूरमा चूनसेर ऽ॥। घृत ऽ॥। गु
ड़ ऽ१ ॥ माघवदी ॥ ३० ऽमावस्या गोपालवल्लभमे

नवापुरी चरणाकीदाल ऽ।।। मेदापाव ऽ।। घृत ऽ।। बूरा
ऽ२।। मिस्रीकोरबा ऽ=।। माघसुद ।। २ गोपालवल्लभमे
सेवकेलडुवा मेदा ऽ।।। घृत ऽ।।। खांड ऽ२।। माघसुद
।। ३।। गोपालवल्लभमेगंगागुडके कूर ऽ१।। मेदा ऽ।।।
घृत ऽ१।। गुड ऽ१।। माघसुद ।। ३।। गोपालवल्लभमे
सीरा गुडको खासेर ऽ।।। घृत ऽ।।। गुड ऽ१।। माघसुद
४ सामग्रीबुडकलकी मेदा ऽ३।।। बेसन ऽ२।। घृ
त ऽ३।।। खांड ऽ५।। मंगला न-श्रृंगारमे न-राज
भोगमे-धारेगे पाछे राजभोगके वंटातेलगाइके
सेनके वंटातांई मठडी-धारेगे।। माघसुद ।। ५।। वसंत
पंचमी पेहेलेदिन सेन-आरतीकरिके साजसब
पेरवांधिये चंदोवा पिछवाई न-सिंघासन न-खंड
पाट चोकी न-गादीनकियाके वस्त्र सब सुपेद स्वेत
रूरहे गादीऊपर सुपेद उपरना बिछे श्रृंगारहोई
वस्त्रस्वेत पाग बारकी खिडकीकी स्वेत पाग स्वेत घे
रदार बागा सूथन स्वेत निया स्वेत पटुका स्वेत मो
जा लाल रेसमी वस्त्र ऊपर छोटी किनारी सुनेरी लगी
साडीस्वेत किनारी लगी भीतर दोऊ वस्त्र स्वेत श्रीबा
लकृस्नजीको श्रोढनी स्वेत किनारीकी बागा स्वेत किना
रीकी बारकी खिडकी दार पाघ पादुकाजीको खोल

न- ऊपर उपरासीवेन उढाईये ठाकुरको फरगुल उढाईये
४-८ तापर लालदस्याई की ओढनी केढि कांनेओढे लालद
स्याई की सादा ओढनी फरगुल ऊपर स्वेत वस्त्र की दू
सरी फरगुल बडी दुहरी उढाईये सीतकिया तांई द
विजाई तापर लाल दस्याई की ओढनी उढाईये बसं
त खेले तोलम यसोखेल चुके नवसब बड़ी होइजाय
फरगुल खुली ओढे रहे हरे रंग की रेसमी अथवा ला
ल रंग की रेसमी और गादी ऊपर रुई की गोदड़ी बि
छे हे सीतकालमे सो गोदड़ी माघसुदी ४ तांई बिछे
पंचमी के दिनासुं उपररगा गादी ऊपर बिछेहे और
आभरण मीना के नथां सोने के धरे चंद्रका १ श्री
गोपीवल्लभभोगमे सेवको पाटीया आरोगे मेदा ऽ१
खांड ऽ१। घृत ऽ। तामे बरा ऽ२॥ राजभोगमे तीन
कूढा न- घोई दार मीठे रपाक की खांड ऽ॥ पापड़ ब
ड़ी कचरीया और जो नित्य आवे सो गोपालब
ल्लभ अनसखड़ी से सामग्री मनोहर के ल
डुवा मेदा ऽ॥ चोरीठा ऽ। घृत ऽ॥। खांड ऽ२।
बड़े बालभोग सेव के लडुवा आरवे दिन आरोगे
मेदा ऽ३ घृत ऽ३ खांड ऽ६ फेरि राजभोग आवे
तुलसी संखोदिक करि धूपदीप करि टेरादे बाहर

आईये समयभरेभोगसराय आचमन मुखवस्त्र
कराइ बीड़ी आरोगाइ झारी फेरभरि सिंघासन ऊ
पर ठाकुरको पधराय गादी तकिया सुपेद फर
गल सोटांगपे फूलकी माला पहराय फेरि बसंत

बाहिरकी [illegible] करवा आचमन कर से

ड़ी पीनइकी तेक नाकनीचे कोरी हरदीको अष्ट

दलकरि ताऊपर करवाको पीरो कपड़ा लपेट धरी
ये करवाके भीतर खजूरकी डार खोसि डारनमें बे
र लगाईये राईके वस्त्र धरीये और बसंतको सा
जर एक चोकी पर धरीये केसर न· चोवा न· गुला
ल न· अबीर छड़ी २ रूपेकी तांमे फूल लपेटीये
न· गेंद २ फूलकी न· आंधीकी मेमाला फूलकी ध
इन नो साज सब चोकी पर धरिके फेरि अधि
वासन करीये आचमन प्राणानायम्य कर अद्ये

त्यादि प्रक्षन जल लेइके भगवन श्री पुरुषोत्तम

स्य वसंतोत्सवे प्रभु [illegible] अधिवासनं मह

करिष्ये इति संकल्प करिके अक्षत जल छोड़नो
धूपदीप कीजिये बसंतको भोग गढ़ेवराकीक
टोरीमे धरीये जलसीडार संखोदिक कीजे फेर
आरती मेवाली २ लगाइ आरती रूपेकी कीजे हा

न-४९ थरनकमे घंटारागेवे अपने हाथसों कीजे पाछे टेरारवे

लिरे बसंत ठाकुरको खिलाईये केसरिसों पागन-

वागाको विराजिवेको गादीको खिलाईये अबीर

पाग पर न-वागापर न-गादीपर फूलकी माला

ऊपर छिरकाइये केसर न-गुलाल न-अबीर

न-चोवा पागपर चोवा वागपर न-गादीपर चोवा

इतनेनटिकंने छिड़कीये पीतांम्बर कोरखिलावने

नांहो फेरसिंघासन वस्त्र न-खंड को न-पिछवा

ईको केसरसों छिरकिके गुलालसों खिलाईयेवो

वालयां अबीरसों खेलेनही बसंत ऊपर संखोदिक

फेरि अबीर गुलाल उड़ाईये फेरे छरव व

स्त्रसों पोछिके टेरादे कारी फेरि भरीये मंदिरव

स्त्रदे चोकीमांड़ि पानारि बिछाय धूपदीपकरिके

उत्सवभोगधरीये छड़के दिनमंगलाभोगले

लेके सेनके वस्त्रताई वसंत पंचमीकी सांमग्नीमे

न आरोगे गोपाल वेनमांड्याहीमेन आरोगे

सेवकेलडुवा मेदा ऽ२ घृत ऽ२ खांड ऽ४ मठ

ड़ीको मेदा ऽ२ घृत ऽ२ खांड ऽ२ गेंदाको कू

र ऽ२॥ मेदा ऽ३ घृत ऽ३ कूरकीखांड ऽ२॥ छूट

कंबूंदी बेसन ऽ२ घृत ऽ२ पागिबेकी खांड ऽ२

सिखरनबड़ी मीलवा पिठ्ठी ऽ। घृत ऽ॥ पागिवेकी
खांड़ ऽ१॥ सिखरन ऽ१॥ तामे बूरा ऽ१॥ छाछ
केवड़ाकी पिठ्ठी ऽ॥ घृत ऽ। मीठे शाककी खांड़
ऽ॥ दूधघरकी सांमग्री बासोंदी दोय तरहकी दू
धसेर ऽ५ बूरा ऽ१ [illegible] ऽ४ बूरा
ऽ॥। बरफी केसरीको दूध सेर ३ बूरा ऽ॥ केसर
मासा ६ पेडा सुपेद दूध ऽ२॥ बूरा ऽ॥ दूधपुरी
को न० मलाईको दूध ऽ६ तामे बूरा ऽ॥ मीठे कूटा
कोदूध ऽ५ तामे बूरा ऽ= उत्सवके सधाना अ
तरमे बास व भोग धरे तुलसी संखवोदिक करि
टेरा दे बाहिर आइये समय भरे भोग सराय आ
चमन मुखवस्त्र कराई बीड़ा धरे टामे न० बीड़ी
६ सैयापास रखु मले २० न्योछावर रु० २
खंडपाट चोकी मांडि चोपड़ा बिछाइये चोगान धरि
आरसी दिखाइये दर्शन खुले फेरि आरती होई
फेरि काच दिखाइ [illegible] के पेड़ा बिछाई अ
नोसर करिये बसंत को साज सब सैयापास चो
की पर रहे एक चोबाकी कटोरी बसंत के साजमे
सो काढि लेनी और सब सिज्या पास रहे सो उत्था
पन समय उठे और बसंत को कर बासाइनो है सो

न॰ ५० संध्या आरतीभयेपाछे उठावनी और अंगार बड़ो करनो
और बागाऊपर कीगुलाल अबीर कट् नारवनी औ
रग्वालकी नवकड़ी पलनां मंदिरमे आरोगे सिंघासन
वस्त्रनयां पिछवाईको गुलाल फाडि नांरवनो फेरिसें
नभोग आरतो फेरिसेन आरतीकरीके मंगलको
गोवडी करीके फेरि प्रभुन कुं अंगवस्त्र करीयेकहं
गुलाल अबीर लग्योरहे नांही फेरि पोटईये बागा
वस्त्रानित्यनरये पेहेरे अष्टपदी नित्य गाईये होरी
डुंगडुनांई न॰ वसंत गाईये॥ वसंतकी विधीसमाप्त
माघसुदी॥ ६ गोपालवल्लभमे खीचड़ी वसंतपं
चमीकी खीचड़ी मंगलाते सेन के बंटा नांईको
माघसुदी॥ ७ गोपालवल्लभमे बुंदीके लडुवा बे
सन ऽ॥ घृत ऽ॥ खांड् ऽ२। माघसुदी॥ १२ गो
पालवल्लभमे बुडकलकी सांमग्री मेदापाव ऽ॥=
बेसन ऽ।= घृत ऽ॥ गायकी खांड् ऽ२। माघ
सुदी॥ १५॥ होरी डांडो रोपन अभ्यंग बागा घेरदार
स्वेत वारकी खिड्कीको पाग स्वेत चौली चोवा बीची
हेय सूथन स्वेत पटका स्वेत स्वामिनीजीको
लाड़ी स्वेत भीतरे वस्त्र देऊ लाल किनारी वस्त्र मेज
गाईये गोपालवल्लभमे मीठी कचोरी मेदा ऽ॥ मूंग

कीदगर ऽ१ घृत ऽ१। नांमेरवांड ऽ२। मीठेशाक
कीरवांड ऽ॥ सरवडीमे सेवको आधो पातीया मे
दा ऽ॥= घृत ऽ= बरा ऽ१ धोईदगर कटी पको
रीकी अथवा बेसाकी दहीमे भिजोये बरा आरो
गे ओर नोमिको आवे सो ... ऽ२॥ लपेटु
रा ऽ॥= बरफी पेड़ा होइसो खेलके दर्शन खुले
नव १ डबरीयामे धारे सिंघासनपास रहे खेलभ
ये पाछे सैयांमंदिरमे पड़गो ऊपर डबरीया रहे है
तुलसी संखोदिक करि धूपदीपकरि टेरादे बाहिर
आईये राजभोग सरे पाछे वसंतखेले पिचका
रीधरीजाए कपोलपर गुलाल लगावनो टोड़ी
ऊपर लगावनो होरीडंडाकेदिना साज सब कुंम
कुमके रंगसे। पिचकारीनसो खिलावने आर
तीमो तीकी करनी अष्टपदी दिन १० फेर धमा
रि गावे बसंतनहीं गावे ॥ फाल्गुनवदी ॥७ सप्तमी
श्रीनाथजी श्रीगिरिराजजीसे श्रीमथुराजीमे श्री
गुसांईजीके घर पधारे सो उत्सव अभ्यंग वागा के
सरी घेरदार चोवाकी चोली केसरी पाग गोल जरी
की केशरी स्वामिनीजीको साड़ी केसरी भीतरे दोउ
वस्त्र लाल श्रीबालकृष्णजीको वागा केसरी पाग के

न- सरो गोल अवधरे है अपने यहां श्रीनाथजीकी वेरागु
५१ विराजै है ताप्तो श्रीनाथजीके स्वरूपकी भावना करनी
रजाई १ लीलीरेशमी ताकोके खरीया ऊपर रंग ताके
भीतर सुपेद पाट के करनो पादुकाजीको ओढनी के
खरी भोजनाओजिके उत्सवमें लेहोयहै ओर गोपीव
६ आभमे राजभोगमें पाट ऊपर गादी १ भोगमंदिरके
पाट पर बिछावनी अभ्भनके दक्ष रंग ओर तकीयापीठ
कपे धरनो तागादी पर श्रीजीकूं पधरावने पाछे गुंजा
फूलकी माला २ पहराय केपाछे अरगजा गुलाल
अबीर चोवा सं खिलावने पाछे थार २ सने दुहरो भो
ग ओर दर्सन होतमे डबरीया १ मे घेड़ा बरफी रहे
है सिंघासन पासतो खेलनुके पाछे सैयाके ओटे नग
१८ आवै पास डबरीयामे रहे है दूधकी सामग्री
४ तिलक नामे बीड़ा ४ गोपाल बद्दन भमे खनमंडा
बीड़ी १ बीड़ा १० खनमंडाकोमेदा ऽ।।। घृत ऽ।।। बू
रा ऽ२। मीठे शाककी खांड ऽ। छाछ केवड़ाकी पिठी
ऽ।। घृत ऽ। सिखरन वड़ीकी पिठी ऽ घृत ऽ= त-
बूरा ऽ१ सिखरराखहुं दूध सिखरनको ऽ१ - - -
५ लघां बासोंदी दूध ऽ२।। खीर दूध दूनो ऽ४ हांड़ी
मलाई छक्के दूध ऽ४ बूरा ऽ१ भोग वेरागुजीको आड़ी १

चौकीमेअ्पनसखड़ी स्यागपत्र न-खीरि न-छाछि केवड़ा
न-भुजेना प्रभातिश्रीठाकुरजीसो आधीमलड़ाजहांआवै
हांड़ीश्रीठाकुरजीकीआड़ी सखड़ीमेसेवकोपाटयाड़े
दो ऽ१॥ घृत ऽ।= खांड़बरा ऽ ३॥ धोरेदार न-तीन

कूटा पापड़ बड़ी आधिकामे [illegible] जोवानेआवे सो

फागुनसुदी ॥ ९ नेचैत्रवद ॥२॥ ताई दीकेन [illegible]रक
रे दिन आठको गोपालवल्लभमेसेवकेलड़ुवाको
मेदा ऽ।।। घृत ऽ।।। खांड़ ऽ१॥ फाल्गुन सुद ॥१०
गोपालवल्लभमेबंदीकेलड़ुवा बेसन ऽ।।। घृत ऽ।।।
खांड़ ऽ२। मेवा ऽ- मिश्रीकीकरणी ऽ=
११ कुंजको उत्सव तादिनसाजसवस्वेत मुकटका
छनीकोश्रृंगार काछनीको रंगकफड़का चोवाकोरंगपो
चोलीचोवाकीकिनारी रुपेरीलगी पीताम्बररंगको अ्पो
रगोपालवल्लभमेघेवरन-पेड़ादूधके आरोगे दूधकेपे
ड़ाको [illegible] कुंजमे [illegible] सिंघासनपररहेहै

सोरवेलभरेगपाछे सैयामंदिरमेरहे सैयापास घेवर
कोमेदा ऽ।।। घृत ऽ१ खांड़ ऽ२। पेड़ाकोदूध ऽ२। द
रा ऽ१॥ राजभोगसरेपाछे कुंजकेराकी न-माधुरीकी
जतानकीसी सिंघासनपास निजमंदिरमेबांधनी तामे
गुलाबकेफूललगावने अ्पांबकोमोर बेगोआयो है

न. यत्तोवेनगावनो ओर रूकपे उवरामे पेड़ासुपेद धरि
५२ वस्त्रसोढांपे उवरासिंघासन पासधरीये सोउत्था
पनमेसरे फेरकुंजपेबिराजे बसंतारबिलाईये कुंज
एकादसीसोडोलनकेपद गवे गुलाल अबीर उड़िके

फेरिआरती भोगीकोल्पेकादीवडाकीकरिके ओन
बनीनथ्थाजी अपने मंदिरने श्रीनाथजीकेपदुं पधा
रेहै गहनाघरकेरस्ता गादी हाथमें टीकेलके ओरसंग
परवावजबाजन्त कीर्तन होत पधारे सोजगमोहन
केराह सो श्रीनाथजी के चरणारबिंदके आगे गादीवि
राजे फेरदर्सनखुलेबसंत खेले वसंतकोसाजसव
खेलतको तैयार रहेहे सोरहे अधिकीमे चोवाकीकटो
री रहे आजके दिन ओर रूक होलीके दिन चोवाकीक
टोरी सिंघासपासरहे निमरहेनहीं २२ व
गीचाकोउत्सव मुकटकाछनीको शृंगार केसरीकिना
रीदार आगेधरने [illegible] धरजीने वस्त्रकेस
री छापाकेकरे [illegible] ओर मुकट पि
रोजाई मीनाकोधरे बड़ो बालभोग गेंदाको गोपालव
ल्लभमे मनोहरके लडुवा मेदा ऽ ३॥। घृत ऽ ३॥। खां
ड ६ मनोहर मेदा बोरीटा पाव ऽ॥= खोवा ऽ॥= ताको
दूध ऽ २ घृत पाव ऽ॥। खांड ऽ २ बगीचाकीलांगी



चंद्रकलाकोमेदा ऽ।।। चोरीठा ऽ। घृत ऽ१ खांड ऽ३
चोरीठा ऽ।
दहीधराकोमेदा ऽ।।। घृत ऽ१ बूराभरकाइवेको ऽ१
गुजरान्नीरवाजाकोमेदा ऽ१ घृत ऽ१ बूरा ऽ१ मेदा
कीपूरीकोमेदा ऽ१॥ घृत ऽ।।। चणाके छोलाकेगंद
छोला ऽ१॥ मेदा ऽ१ घृत ऽ१ मीठीकचोरीकोअठ
ऽ।।। घृत ऽ।।। मेदा ऽ॥ छाछकेवड़ाकीपिठीसेर ऽ॥
घृत ऽ। [illegible] वड़ीकी मिलवापिठी ऽ॥= घृत
ऽ।– पागिवेकीखांड ऽ१ सिखरन ऽ१ तांमेबूरा ऽ१॥
मीठेपागककीखांड़ ऽ॥ फड़ फड़ीयादाल ऽ। नयांफ
ड़ फड़ीयाबूरा ऽ। घृत ऽ। सरवड़ीमे सेवकोपाटी
या आधो मेदा ऽ॥= घृत ऽ= बूरा ऽ१। छड़ीयलदा
र न कटीपकोड़ीकी अबदूध घर कीसमा
पेडादोइनरहके दूधसेर ऽ५ बूरा ऽ१ बर्फीदोइनर
हकी दूधसेर ऽ५ बूरा ऽ१ बर्फीदोइनरहकी दूध
सेर ऽ५ बूरा ऽ१ बासोंदीदोइनरहकी दूध ऽ५
बूरा ऽ१ इनतीन्योनमेकेसरमासा ६ हांडीमलाईको
दूध ऽ५ बूरा ऽ।।। दूधपूरीन मलाईकोदूध ऽ६
बूरा ऽ।।। मीठेकूटाकोदूध ऽ२॥ बूरा ऽ। रबोवाकेगं
डाको बूरा ऽ१ पागिवेकीखांड ऽ।।। घृत ऽ।।। दूध ऽ५
राजभोगआरोगिकेमंदिरमेत्ते बगीच्चामेपधारे नव

- न- चालनीकेपगमंड़ा गुलालअवीरके न-हरदीकेकरे ओरगादी
५३ हाथमेलेकेटीकेत्तछत्रछागीऊपररहे ओरमंदिरमेतेव
गीचामेपधारेकीर्त्तनहोत्तसोनवचोकियापरविराजे न
वचोकियाकेआगेचारयोआड़ी सिढीरहे ओरऊपरस
पेदवस्त्रकी रजोली नवचोकियापर ठाकुर गादीसुद्धांवि
राजे फेरझारीभरिये चोकीमांडे पातिरविछायधूप
दीपकरिये फेरभोगआवेबगीचाको अनसखड़ीनयो
दूधघरकी सबभोगधरिके शंखोदिककरिकेवाहिरवे
ठिये समयभरेभोगसराय नवकडीमेबीड़ा २० धरिये
बीड़ी १ नवचोकियामेभोगसरेआरोगे पकट गुलाव
कोधरेखेलेनव फेरिकीर्त्तनहोई दर्सनखुलेठाकुरखे
ले नवनवचोकियामेखिलाईये चोवाअफेरगुलाल
अवीरउड़े कुंमकुंम उपरागुलालकेरंगे २ कीर्त्त
नीयाको दीजे रंगउड़े पाछेमोतीकीवगीचाकीआनी
रूपेकोदीवड़ाधारिकीजे ओरन्योछावरकरिकेठा
कुरकोगादीहाथमलेकेमंदिरमेवाहिरकीतिवारीमेएा
कचोकीऊपरपधराईये खेलवोहोत्तहोइसोगुला
लऊारिये फेरीसिंघासनऊपर गादीपधराईयेफेरो
रबगीचाकोभोगआवे नवत्ताईधमारिगावनीभोग
सेरपाछे दर्सनखुले तवडोलके कीर्त्तनगावे ओरमंदि

रमे सिंघासन पर विराजे फेर गुलाल अबीर उडे पिछवाई सिं
घासन खंड वस्त्र प्रभृति सब चित्र की होहोई है इनको क
छू विजावने नांही फेरि पाटचोकी मांडि आरती नित्य की
रूपे की करीये॥ फाल्गुन सुदी ॥२३ गोपालवल्लभ मे
फेनी मेदा ऽ॥ बोरीरु ऽ। घृत ऽ॥ खांड ऽ॥ फाल्गुन
सुदी॥२४॥ गोपालवल्लभ मे मेवाटीके लडुवा मेदा ऽ॥।
घृत ऽ॥। मिश्री को रवा ऽ॥। खांड ऽ१॥ फाल्गुन सुदी
१५ प्रत्यो होरी को उत्सव अभ्यंग वागा घेरदार पाघ बार
की खिडकी की स्थन पटका स्वेत तनीयां स्वेत स्वामिनी
जीको साडी स्वेत भीतर वस्त्र लाल वालकृष्णजीको
वागा स्वेत ओढनी स्वेत पाघ स्वेत बारकी खिडकी
की पादुकाजीको स्वेत ओढनी वस्त्र सब मे किनारी लं
गावनी गोपीवल्लभ मे सेवको आरवा पाटीया आ
रोगे मेदा ऽ१। घृत ऽ। बूरा ऽ२॥ वडो वाल भोग से
वके लडुवा को आखो दिन में सेन के वंटा नांई आरोगे
मेदा ऽ३ घृत ऽ३ खांड ऽ६ दूध ऽ१॥ मीठे साक की खां
ड ऽ॥ छाछ के वडा की पिठी ऽ॥ घृत ऽ। हांडीमलडा
को दूध ऽ५ बूरा ऽ॥। राजभोग मे खीरि को डवरा सदां
नेग्रनो आरोगे होरी के दिना खेल के समय दूधघर की
कटोरी ३ तीन्यो ठिकाने सिंघासन पास रहे वस्त्रने

न- टांपिके सरवड़ीमे तीनकूटाधोईदार बड़ीपापड़ऱ्प्रोरजो
५ध नित्यऱ्प्रावतहोई सोभोगसेररवेलेनही होरीकेदिन
सेंनसमेटाटवेत्रधरे कपोलनपे गुलालगावनो
सेंनसमे एकजोगुलालडड़े सेंनऱ्प्रारतीमोतीकीकर
नी ॥ [illegible]
जादिनहोई तादिन डोलोत्सवहोई होरीकेदूसरेदिन
जो उत्रा फाल्गुनीनक्षत्र होई नवएकदिनाबीचमें जाइके
दूसरे दिन डोलोत्सवहोई डोलसवेरेकीहोई ऱ्प्रोरहोरी
सांझको प्रगटीजाय तादिनागुलालपिछवाई सिंघासन
वस्त्राकी झारीजाय पराासाज दूसरोबधेनही सेंनऱ्प्रार
तीभऐठाकुरपोटेपाछेवंधे सेंनसमेगुलालउड़े पेहे
लेदिनडोलबांधिराखीये केराकेवृक्ष न-ऱ्प्रावकेपात
न-माधुरीकीलता एकखंभ दोऊनकोबांधनो ऱ्प्रोरखे
तवस्त्र तरेसोडोल सबलपेटनो डोलकेलालरखेतव
स्त्राकीकरनी डांडीखंभ सबखेतवस्त्रसो लपेटनो
पिछवाई ने-चंदोवा ने-डोलतिवारीमे सर्वत्र सुपेदवस्त्र
सोसटीये फेररात्रिकोवेगिउठनो उठिकेमंगलाकरि
ऱ्प्रभ्यंगकराईये वागोखेतधेरदारकिनारीलगो पागछ
ज्जेदारबिनारिवड़ कीकीस्वथनन-पटका न-तनीयाखा
मिनीजी कोसाड़ीखेतकेसरीकोरकीभीतरेवस्त्र दोऊआ

न श्रीबालकृष्णजीको बागा न-पागत-ओढनीस्वेत

पादुकाजीको ओढनीस्वेत सुपेतीके साज सैयासों

लगाइके सिंघासन सो लगाइकें मुखवस्त्र अंगवस्त्र ले

के वंदासवन सोहोइहै अब गोपीवल्लभमें आरोगायो

सेवको आरोगे मेदा ऽ१ घृत ऽ। बूरा ऽ२॥ राजभोग

में तीन छुटाधोईदार पीठ राखके खांड़ ऽ१। बड़ीपाप

ड़ श्रोरजो नित्य आवत होयसो अनसखड़ीमे गोपी

वल्लभमे घांसके लडुवा उर्दको चून ऽ।।। घृत ऽ।।।

मेवा ऽ= खांड़ ऽ३ सुगंधमासा ६

अबडेलोत्सवके सामग्रीकी विगत बूंदीके लडुवाको

बेसन ऽ४ खांड़ ऽ२ बारह घृत ऽ४ मिश्रीकी करणी ऽ।

दारवत यो पिस्ता मिलिके ऽ। छुटवा बूंदी बेसन ऽ१

घृत ऽ१ खांड़ ऽ२ सेवके लडुवा मेदा ऽ४ घृत ऽ४ खां

ड़सेर ८ गेंझाको कुर ऽ४ मेदा ऽ५ खांड ऽ४ घृत ऽ८

मठड़ीको मेदा ऽ१ घृत ऽ१ खांड़ ऽ१ सकरपाराको

मेदा ।ऽ खांड़ ।ऽ घृत ऽ बाबरदोइ तरहके मेदा ऽ३

घृत ऽ३ खांड़ ऽ३ फेंणीदोय तरहकी मेदा ऽ३ घृ

त ऽ४ खांड़ ऽ३ मेवाटीके लडुवाको मेदा ऽ२ तामे

मेवा न-बदाम न-पिस्ता न-किसमिस मिलिके सेर

ऽ१॥ मिश्री ऽ१॥ घृत ऽ२ पागिबेकी खांड़ ऽ४

न- मनोहरकेलडुवा मेदा-चोरीठा मिलिके ऽ१॥ दूध ऽ६॥
५५ खोवा ऽ१। तांको घृत ऽ१॥ तांमे खांड ऽ६ सिखरनवड़ीकी
पिठ्ठी मिलवा ऽ।= घृत ऽ।= पागिवेकी खांड ऽ१॥। सिख
रन ऽ२ तांमे बूरा ऽ२ छाछकेवड़ाकी पिठ्ठी ऽ१ घृत ऽ।
कंजीकेवड़ाकी पिठ्ठी ऽ१ घृत ऽ॥ ।उतनिमिलत उत्सवके
सामग्रीकी विधि ॥ श्रीमद्दाऊजी श्रीगिरधरजी
जीको जन्म उत्सव है ॥ चैत्रबदी॥ १ ॥ नानेसांम-॥
श्राद्धिकी आरोगेहै जलेबीकी मेदा ऽ१ घृत ऽ० मा
दूसेर ऽ३ दूधघरकी बरफी दोइ तरहकी दूधसेर ऽ५
बूरा ऽ१ केसर मासा ६ पेड़ा दोइ तरहके दूध ऽ५ बू
रा ऽ१ केसर मासा ६ बासोदी दोइ तरहकी दूध ऽ५
बूरा ऽ१ केसरमासा ६ खोवाके गेरुआ दोइ तरहके दूध
ऽ५ मिश्री ऽ॥। रसखोराकी गोली नग १० बड़ी ४ ना
बूरा ऽ१॥ मिश्री ऽ। दूधपूरीको न-मलाईको न-मे
टाको मिलिके दूध ऽ५ दस बूरा ऽ१॥ हांडीमलाड़ाके दू
ध ऽ५ बूरा ऽ॥। माखन ऽ। मिश्री ऽ। भोगघरवाके
मेवासबको न-मुज्योलोंनामिरचकोसब मिलिके ऽ। भर
लेनो मिठाईकी खांड ऽ४ बदाम पागी सधानाके रीको
नीबूको आदाको टेंटीको न-रतालुको न-कोल्हाको
न-सूरनको न-सकरकंदको न-बेंगनको न-कोकड़ीको

मिरच आरबी न-छुवारा न-पीपर न-दारव पेसव ऽ=

नेनो नामे हरदी राई जौन मिलाइके नीबूको रस निचो

इनो सखड़ी मे सेनवको पाटीया आरबो आरोगे मेदा

ऽ१ घृत ऽ। बूरा ऽ२॥ घोवादार न-नोनखुदा न-बड़ी

[illegible] कचरीया [illegible] सेनवके न-कोठे [illegible] और

[illegible] नार ऽ२ राजभोगमे राजभोग सरे पाछे मंदिर में सिं

[illegible] सनपर बिराजिके आरती होइ के पाछे फेरि डोल को

[illegible] धवासन करनो पूरब मुख बेठिके जल अक्षत ह

[illegible] मेले आद्येत्यादि भगवत्त श्री पुरुषोत्तमस्य डोलाधि

[illegible] रां कर्तुं डोलस्याधिवासनं अहं करिष्ये इति संकल्प

[illegible] अक्षत जल छोड़िये न्यारे खेलको साज ४ जुदो जु

दो सिद्धि करि धरीये फेरि चंदन डोल कूं लगाइ धूप दीप

[illegible] और गद्दी बूराकी धरि सखोदिक जलसो समर्पिये फेरि

[illegible] गसराय आरती करिये डोलकी फेर राजभोग सराय

ठाकुरको सिंघासन पर पधराय आरती करिके फेरि

[illegible] करि घंटा बाजत [illegible] डोल पर पधारे फेरि थोरे सो

खिलाई दर्सन होई फेरि ठारी भरि धरीये मुखवस्त्रन

यो धरीये फेरि चोकी बिछाइ धूप दीप करि भोग धरीये

उत्सवको अपन सखड़ी न-दूध घरकी न-सधाना और

[illegible] लेवीकी सामग्री अधिकी मे आरोगे सो प्रतिपदा

न. ५६ कोदिनराजभोगमे आरोगे डोलके भोगमेधरनेनहीया
भांतिसबडोलकोभोगसोपेहेलेभोगमे घोरेघोरेसब
आवे दूसरेभोगमे घोरेघोरे आवेसब छेलेभोगमेस
बधारिदेनो अबखेलपेहेलो खेलहोइके भोग आवेही
हैं फेरिभोगसरे ...
२० धरने खेत्रबस्त्रसो टोपिके सोछेलोभोगसरे रव
होइचुके आरतीभरेपाछे प्रसादीमे बीड़ा निकसे प्र
रबीड़ी १ पेहेलेभोगमे आरोगे बीड़ी १ दूसरेभोग
आरोगे बीड़ी २ तीसरेभोगसरे आरोगे खेलतीसरे भो
गमेभारीहोइ पेहेलोभोगसराय ठाकुरकोखिलाइ
छवाइ चंदोवा खिलाइ ओर गुलाल अबीर कुमकुम
को रंग उड़ाइ आरती मोतीकी रूपेकीवड़ाधरिकीजे
फेरिटेरादे चोकीमांड़ि धूपदीपकरि भोगधरि तलसीसं
खोदिक करि झारीफेरि भरिधरीये टेरादे बाहिर आईये
भोगसरेधमारिगावे दरसनखुले जबडोलगावे भोगस
राइ आचमन मुखवस्त्र ... बीड़ी आरोगाय बीड़ा
धधरि नईमाला पहराय दर्सनखुले बीड़ी आरोगेफेर
खेलहोइ ठाकुरको न-डोलको न-सिंघासनपाछे पिछ
वाईसहूं केसर न-गुलाल न-अबीर न-चोवासबठोर
छिरकनो डोलको न- पिछवाईको न-झालरकोडोलकी

कोफेरमोत्तीकीआरती रुपेकोदीवलाधरिकरीये फेरटेरादे
रारीदोइ भरिधरीये भोगप्रमाराग रंकजलकी चपटीया
धरिभोगधरीये चोकीमांड़ि पाजलविछाइ धुपदीपक
रिछेजोभोगसवधरीये फेरि तुलसीसंरवोदिककरि
टेरादैबाहर [illegible]
[illegible] वस्त्रकराइ मालानइ पहराय दसेनरषीजीये दर्सन
अनमे वीड़ी आरोगे २ फेरिठाकुरको खिलाइ डोलको
खिलाइ पिछवाई चंदोवाको खिलाइके कुंमकुंमकोरंग
उड़ावनो ओर गुलाल न- अबीर उड़े पोटलीउड़े न- गल
न- अबरखनको बूकोनारवके उड़े न- पचरंगीगुलाल
उड़े फेरिआरतीमोत्तीकीरुपेकोदीवड़ा धरिकीजे रा
इलोंनउतारिये फेरिन्योछावरकीजे रो- वस्त्रसालके
नथांउपरेराग फेरसखीयाभीतरीयाकोकीर्त्तनीया
को केसर न- गुलाल अबीर न- चोवाछिरकीयेसरवो
याघरधनीको छीड़के फेरकीर्त्तनीयाको छिड़कीये
फेरिडोलकी प[illegible]ठाकुरको निवारीमे
चोकीपर पधराय श्रृंगारवड़ोकीजे अंगवस्त्रकरि
गुलालन थांकेसर न- चोवालग्योहोइ सोसवपोछि
फेरिलालनमीयापहराईये ठाढेस्वरुपहोइ तोसी
रषावस्त्रसुनहरुईके ठाढेस्वरुपश्रीमस्तकपेकुल्ही

न· ५७

लालधरे अलकावलीश्रीकंठमेलइ न·मोतीकीदुग
दुगी न· श्रीहस्तमे पोहोचीनूपुरचरणारविंदमेरत्न
नोठादेस्वरूपको बालकृष्णजीकोतिलक श्रीकंठमेलइ
मस्तकऊपर कसरतत पुरातनपागपरधरे लालज
रीकीलेपीसीतल कसरमलधरें जरीकोगदल ओ
ओर ढइनहोइनोजरीकोफरगुलओढे ओरसि
सनवस्त्रखंडपाट न· पिछवाईचंदोवातीसरोभोग
धरिमंदिरमेतेगुलालकाढिमंदिरधोइकेसाजलोज
जरीकोबांधिये ओरसैयाकीछुपेतीदोइरहे ओरसै
याऊपर सुजनीबिछाइचादरबिछाईये सैयापासवो
डानथामाला न· बंटा न· झारीभरिधरीये ओरखंड
पाटचोपड़ मांडि चोगानमांडि त्रष्टीधरीयेड़ो बिछाइ
अनोसरकरीये फेरनित्यकीरीति उत्थापनतेडोल
बड़ोकरीये॥ चैत्र वदी॥२॥ डुलीयापाटकोउत्सव अ
भंगलालतासकोवागा मस्तकपरकुलहहीराकी
न· स्त्रथनजरीकी [illegible] को स्वामिनीजीको
तासकीसाड़ीभीतरेवस्त्र हरे बालकृष्णजीकोतता
सकोवागा ओढनीतासकी मस्तकपर हीराकीकुलह
हीरापन्नाकेआभरण पादुकाजीको ओढनीलालता
सकीगुंजानई गोपालबल्लभमे सामिग्रीखीचड़ी ओर

ड़िशृंगारगें डोलमेकी ओरनित्यआवेसो गोपीवल्लभमे
ने- राजभोगमे राजभोगआरतीमोतीकी होइ ओरफू
लबानिआवेतिलनी फूलमंडलीकरनी ।। चैत्र वद ।१२।।
भाई गिरिधारीजीको उत्सव गोपालवल्लभमे जलेबी
मेदा ऽ।। घृत ऽ।। बूरा ऽ २।। चैत्र सुद ।। १ प्रतिपदा
संवत्सराई प्रथम [illegible] को [illegible] छा
पाको कुलही लाल छापाकी चाकदार सीन होइ तो
ओरगरमी आइ गई होइ तो खुलेबंद को घेरे ओरसू
नेरी छापाकी कुलही लाल सूतकी पटका लाल सूतको
छापाको सुनहरी छापाको श्रीस्वामिनीजीको साड़ी लाल
छापाकी कुलही लाल छापाकी श्रीपादुकाजीको ओढ
नीलाल छापाको गोपालवल्लभमे मनोहरके लडुवाको
मेदा चोरीठा मिजिके ऽ।।। दही ऽ।।। घृत ऽ।।। खांड ऽ २।
मीठे शाककेरी खांड सेर ऽ।। छाछके वड़ाकी पिठी ऽ।।
घृत ऽ। हांडी मलाइको दूध ऽ ५ बूरा ऽ।।। सखडीमे सेव
को आधो पाटीया मेदा ऽ १ घृत ऽ = बूरा ऽ १ धोवा
दार तीनकूंडा पापड़वडी इतनो अधिकीमे राजभोगआ
रतीमोतीकी होइ यह रीतिहे ।। चैत्र सुद ।। ६ वड़े श्रीज
दुनाथजीको उत्सव श्रीगुसांईजीके छटवे लालजी
को वागा वस्त्रपीरे अथवा नोवत आधरे ।। श्रीमस्तकमे

न. कुलहे श्रथवाटिपारो राजभोगमे हांडीमलड़ाकोदूध
५८ s५ बूरा s।।। श्रोरानेत्यकीरीतिसे कंदकेशाकरामनोमी
तांई श्रारोगेफेरिनही श्रोरपापड़सेनमे ध श्रारोगे रामनो
मीतांई तापाछेनित्यसेनभोगमेपापड़ २ श्रारोगे चैत्र सु
दी ॥ ९ ॥ रामनवमीकोउत्सव श्रभ्यंग केसरीवस्त्रकेसरीकुल्हे

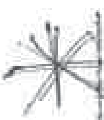
रवागाकेसरीकिनारीलगी कुल्हेकेसरीकेकर्णफूल राजडा
ऊ त्यागस्नानपनजोलपटकाश्यामहू श्रीबालकृष्णजीकेसा
ड़ीकेसरीरुपेरीकिनारीकी भीतरदोऊवस्त्रलाल श्रीबाल
कृष्णजीकेवागाकेसरी कुलहीकेसरी नुरीजडाउकेश्रो
ढनीकेसरीरुपेरीकिनारीलगी गोपालवल्लभमेमे
वाटी मेदा s।।। घृत s।।। मेवा s।।। मिश्री s। खांडपाग
वेकी सेर s।।। उत्सवकीसामग्री छटवाबूंदीवेसनs१
घृत s१ खांड s१ मिश्री s= सुगंध s= सकरपाराको
मेदा s१ घृत s१ खांड s१ मीठेशाककी खांड s।।
पागकीमिश्री s। [illegible] पिठी s।। घृत s।
खोरको दूध श्राधीसेर s२।। बूरा s।। हांडीमलड़ाको

दूध s२।। बूरा s।। हांडीमलड़ाकोदूध s२।। बूरा s।।
सखडीमे सेवकोश्राधोपाटीया श्रारोगे मेदा s१। घृत
s। बूरा s२।। धोवादार न-तीनकूटा बड़ीपापर इतनोरा
जभोगमेश्रावे श्रबजन्मभरेपाछे [illegible] उत्सवकेभोगमे



दहीभात्त आवे चोरवा ऽ ॥ दही ऽ १ राजभोगसराइ ठा
कुरको सिंघासनपर पधरायके पंचामृत्तको साज दू
धसेर ऽ १ दही ऽ ॥ घृत ऽ = सहत ऽ = बूरा ऽ । येसब
धरीये संखसधरीये जलसोंधरीये पाछेसंखीपरान
परपीटाधोरिपीटापर कुंकुमको अष्ट दलकारि टेरा
खोलिये सोंखबजाय घंटा नाद होय ठाकुरकोश्रीला
लक्ष्मजीकोपधराइये पीटापर फेरअक्षतजल
लेनो हाथमे आचमन प्राणयामकरि देशकाल सं
कीर्त्य भगवत्त: श्रीपुरुषोत्तमस्य राम: प्रादुर्भावोत्स
वं कर्त्तुं नंदंगत्वेन पंचामृत्तस्नानकरिष्ये संकल्पक
रिके अक्षत्तजलछोड़िये पाछेपीटापरपधारेहै ति
नकूंतिलककीजे अक्षत्त दोइ वेर लगाइये तुलसी च
रणारविंदपरसमर्पिये न० तुलसी पंचामृत्तके कटोरा
नमेसमर्पिये संखमे तुलसी डारि अक्षत्त वडे करिके
पंचामृत्तसोस्नान कराइये पहेले दूधसो पाछे दहीसो
पाछेघृत्तसो पाछे बूरासो पाछे मधसो पाछे फेरि १
संखदूधको और एक संख सीत्तलजलको ढारीये हा
थमेलेई केसरिसोस्नानकरायके अंगवस्त्रकरीये फे
रठाकुरको गादीके आगेपधरायवस्त्रधराइ ठाकुर
को त्तिलककरि अक्षत्तलगाई फूलकीमालापहराइये

न·
५९ फेरिपचाम्रत्तस्नानकीरेहे उनको तिलकअक्षतलं
गाइके फूलकोमाला <u>धरोकीजे</u> पहरायजन्माष्टमीको
पीताम्बरउदायकेसरछिरकिये चरणार्विंद परतुल
सीदेऊठोरसमर्पिये फेरटेरादीजे सरवड़ाकरिघंटा
बाजततेरावीये फेरिमंदिरवस्त्रकरि धोकेमांड़ि
धूपदीपकीजे उत्सवकोभोगधरीये
औररामनोमीने दुहरेचादरसैयापर बिछे सुपेदीछी
टकीरहे बैसारववदी ११ सुं हिंडोलतारवाटाविछैहै
सोदसहरातांई औरसैयामंदिरकीनिवारीरहे सोसै
यामंदिरतांईमेरहे औररामनोमीनेछींटकीसुजनी
बिछे सोअक्षयत्रतीयासोसुपेद रुईकीसुजनी सोरूपा
नपाञ्चातांई खेरचिकनकी न·कमलको
सरवड़ीमेदहीभात न·ओको सुद्धो धातकी कटोरी
दहीभातकेडबरामेआवै न·अनसरवड़ीमे बूंदी न·
सकरपारा न·मिश्रीकीपना न·सधानाकीकटोरी
न·फलाहर धरै मंगलादिक अनसोसमर्पि टेरादेवा
हिर आईये समयभरेभोगसराइ आचमनमुख
वस्त्रकराई बीड़ा २ धरे झारीफेरिभरि धरिपाछेसा
जसन मांडि आरतीमोनीकी चंनकोदीवलाधारिकी
जे फेरिपंचामृत्तकीरेहे उनको उनके ठिकानेपध



राय फेरठाकुरकोन्आरसीदिरबाइ फूलकीमालाव
डेस्वरूपनकीकरीये आरजिनकोपंचामृतभयोहै
य उनकीमाला उत्थापनसमेवड़ीहोई यहरीतिहै
औरसननोमीकं आरतीमें रूपेकोदीवड़ा तिलकके
और ४ भोगके तामें २ बड़े २ छोटे श्रीमहाप्रभुजी
केउत्सवसो हिंडोलावावद विषे सोजन्माष्टमीकीरात
नंई फेरिस्नानोसरकरीये भोगसरेकेबीड़ा उत्थापनसू
मोनिकसे पाछेनित्यकीरीति रामनोमीपेहलेसजुवा
संक्रांतिभईहोइतो सजुवारामनोमीके उत्सवकेभोगमे
सरवड़ीमेगीलोआवे दूसरेदिनसिंगार रामनोमीको
होई औररामनोमीतेमंगलभोग त-मंगलाआरतीमं
दिरकीतिवारीमेहोई सेन्यातिवारीमेविछे सयनआ
रतीतिवारीमेहोई श्रृंगार वड़ेहोई सोवागाराम
नोमीते संध्याआरतीभई और वड़ोहोई यहरीति
है गरमीहोइतो जनेपरवारामनोमीसोनिकसे और
रामनोमीतेमंगला त-सयनआरती तिवारीमेहोय
सोठेठ श्रावणसुदी १५ पून्योतांई तिवारीमे आय
वाचोकमेहोइ सोश्रावणसुदी पून्योसोसिंघासनति
वारीमेबिराजे सोमंगलाआरती त-राजभोगआ
रती त-संध्याआरती त-सयनआरती तिवारीमेसिं

नं० ६० घासन पर होय सोठेठदलेराताई बिराजे दसहरातेफेरी
निजमंदिरमोविराजे रामनोमीते सेयाकी दीनमे चुनीके
पायनपर रहे सोदिवारी तांई चुनीध रीरहे फेरिरवो
लरहे॥ चैत्र शु. दी ॥१०॥ गोपालवल्लभमे वंदीकेलडु
वाआरोगे बेसन सेर ऽ॥ घृत ऽ॥ खांड सेर १ऽ॥ चै
त्रेमे मेष सुगंध मासा २ मिश्री ऽ= घीरेनो ऽ=
संक्राति होई ता दिनकीविधी श्रृंगारनित्यको ओर
संक्राते नित्यको ओरसंक्रातिनेपेहले पुण्यकालप
वे परयोषी संक्रमात् पुण्यकाल घटिका सुषोड्सय
हवचनते संक्रमणते पेहेले १६ घड़ी पुण्यकालहै नो
दिनमें मेष संक्रातिहोई तवतो सतुवाके लडुवा सतुवा
सेर ऽ६ बुरा ऽ२ बारह घृत ऽ६ मंगलामे आधवागो
पीवल्लभमे गोपालवल्लभमें आधवा वंटामें आरोगे
ओरसांजकोहोय तवतो उत्थापनभोगको आरोगे
न॰ संध्याभोगमे न॰ सयनभोगमे आरोगे नहि तोफे
र सैयाके वंटा साथि आरोगे राजभोगमेघोल्योसतु
वा आरोगे सतुवा ऽ॥ बुरा ऽ१ घृत ऽ॥ ओरधूप
दीपकरि तुजसीसमर्पिये शंखोदिक नहीं होय
काहेते जोजलकोस्पर्श होइ तो सरवडी होय यातेस
तुवान ही आरोगे ओरस वेरे सतुवा आरोगे राज

भोगनांईहू सोगोपालवल्लभसखुवाकोआ
रोगे सखुवा ऽ॥। घृत ऽ॥। बूरा ऽ२॥ जहांनांई
सखुबाश्रीठाकुरजीआरोगेनही तहांनांईमुखवे
रहेनो ओरघोरी घोरी सखुवा बीचबीचमेआरोगे
राजभोगमेसखडीमे। इतिमकरसंक्रान्तिविधिसमाप्तं
वैसाख व दी ।११। श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको
उत्सव॥अभ्यंग॥केशरीवागा सूत्तट रुपेरीकिनारी
को चाकदार गरमी वोहोत होइतो खुलेबंदकोवागा
धरे कुल्हेकेशरी तुर्राजड़ाऊ पटका लाल सूथन
लाल तनीयांकेशरी श्रीस्वामिनीजीकीसाड़ीके
शरी रुपेरीकिनारीकी भीतरदोऊवस्त्रलाल श्रीना
नलसजीको वागाकेशरी ओढनीकेशरी कुल्हे
केशरी तुर्राजड़ावको श्रीपादुकाजीको ओढनीकेश
री रुपेरीकिनारीको गोपीवल्लभमे मानकी घारके
ठिकांने सेवको आरतीपाटीया आरोगे मेदा ऽ२॥=
घृत ऽ।= बूरा ऽ [illegible] सखड़ीमे घोवादार तीनकूंडा
बड़ी पापड़ अनसखड़ीमे जलेबी मेदा ऽ३ घृत
ऽ३ खांड ऽ६ बूंदीछुटवां वेसन ऽ२ घृत ऽ२ खांड
ऽ२ सुगंधमासा २ मिश्री ऽ= चिरोंजी ऽ= सिखर
नवड़ी मीलवापिठीसेर ऽ। घृत ऽ। खांडपागिवेकी ऽ२

न· सिखरराा ऽ१॥ नंमेबूराऽ१॥ मेदाकीपूरीकोमेदा
६१ ऽ१ घृतऽ॥ छाछकेवड़ाकीपिठ्ठी ऽ॥ घृतऽ। मो
ठेशाककीखांड़ ऽ॥ सनुवाऽ॥ बूराऽ१ बूराऽ
परागमिश्रीको मिश्रीऽ। मेवामिठाईकी थारमेमेवा
सवनरहको मैसा ५ मर सबकोनवांभयो न·पयो
मिठाईकेतीनरवांडसेरऽ२॥ मीठभातकेचोरवाऽ॥
मेवाऽ। बूराऽ२ घृतऽ। केसर मासा ४ जलेबीन
श्रदीको श्रारवेदिनकोवारा न·गोपालवल्लभकी
थाल न·महाप्रभुजीकी थालश्रारोगेगे संवत् १८२१
श्रीजीवनजीमहाराजनेकाकाजीनेपांचभातस
दामनसुरुकरेहै श्रारोगगावत्ते दहीभात चोरवासेर
ऽ॥ दहीऽ२ सिखरनभातके चोरवा ऽ॥ सिखरनऽ२
बूराऽ२ खट्टेभात न·वड़ीभातके चोरवाऽ१ जिस
गोकलेशने श्रापकीश्राज्ञासंयाहीप्रमांरा श्रीगुसां
ईजी न· श्रीगिरधरजीके उत्सवपे पांचोभातस्वदां
करने मि·पो·व·५ कोलिरव्योहै दूधघरकोसां
मग्री केशरीपेड़ा दूध ऽ२॥ बूराऽ॥ केसरमासा
२ वासोदी २ नहद की दूध ऽ४ बूरा ऽ१ केसर
मासा ६ वरफीसादादूध दूधऽ२। बूराऽ। दूध
पूरीन· मलाईको मिजकेदूध ऽ६ बूराऽ॥ मीठकूटा

कोदूध सेर ८१ बुराआना ८= इतनो सब राजभोगमें आवे
और पादुकाजी हस्ताक्षर विराजत होंइ तो अभ्यंग पादु
काजीको और पलगड़ीके साज बाजभीजी हरदीको
चोक पूरनो सो सखड़ीभोगकी थार आवत हांलाई
चोक सखड़ीकी थार भातको ४ [illegible] तीन
कूदा सेव ७ सखड़ीमें शाक पत्र होइ सो रुक रोटी
ने छोटी नहीं और सब आवे अनसखड़ीमें सां
मग्री सब मेवा मिठाईकी थार दूधको डबरा तिल
गड़को जन्माष्टमीके दिन आवे और उत्सवमें तिल
गड़ मिल्यो दूधको डबरा आवे नहीं पलगड़ीके आ
सपास करि पलगड़ी पधरावनी बंदनमाल सर्व
त्र बांधनी आवके पत्तोवाकी फेरि ठारी भारि फूल
की माला सर्वत्र पहराइ मोतीकी आरतीमें चनको
दीवड़ा धारे मुठीया ४ धारिके आरती प्रगटिके श्री
ठाकुरजीको तिलक होय ताके बीड़ा २ बड़े ४ छो
टे पाछे आरती [illegible] बीड़ा [illegible] बंटामें धरने अ
धिकोबीड़ा ६ सैयाकी नबकड़ीमें धरने आरती
ठाकुरको करिके दर्पण दिखाइ हाथ धोय बड़ आ
रतीमें कुंमकुंम अक्षत धरीये और श्रीमहाप्र
भुजीको तिलक करि अक्षत लगाइ बीड़ाको कुंम २

लगाइवीडा २ दोनोआड़ीपलगड़ीकोधरीये मुठी

यावारिआरतीकरीये न्योछावरकरीये हाथधोई

फूलकीमाला ठाकुरकीवड़ीकरीये पादुकांजीकी

मालासंध्याकोवड़ीहोई श्रीमहाप्रभुजीके उत्स

वमेपेहेलेदीनसमवलसीकेगगचढ़तेहे सोलगाइ

मीको भ-महाप्रभुजीकीवधाइगाइजाय

बैसाखवदी॥१२॥ गोपालवल्लभसेवंदीके लडुवाबे

सन ऽ॥= घृत ऽ॥ खांड ऽ२ सखड़ीमेथोवादार

वैसाख व दी ३० श्रीगोपीनाथजीकाकाजीको

जन्मउत्सव गोपालवल्लभमेजलेबीआरोगे॥ मे

दा ऽ॥ घृत ऽ॥ खांड ऽ२ वैसाख ब दी ३॥ अ

क्षयतृतीया वड़ोवाजभोगसतुवाको सतुवा ऽ३

घृत ऽ३ बुरा ऽ६ सेंनकेवंटालांईआरोगे और

गोपालवल्लभमे मनोहरकेलडुवा मेदाचोरीठा

ऽ॥ घृत ऽ॥ खांड ऽ२ पेहलेदिनासिंघासनाप

छवाई चंद्रवा प्रभलीसेत सारलीअरगपाछेसाजवा

धिरगखनों अभ्यंग नरेगपिछोड़ा अक्षयतृतीयाने

पहेरे हलकेरंगको वीचमेगरमीपड़ेतो फरानेरंगीन

पिछोड़ा पेहेरे हलकेरंगके पिछोड़ासेतकेसरीकोर

को कुलहीसेत तुर्रा केसरीकिनारीके जिनरहेउवस्त्र

तनीयांसेत श्रीस्वांमिनीजीकीसाड़ीकेसरीकिनारीकी १

अरगजाई श्रीबालकृष्णजीको कुल्हेही स्वेत केशरी
कोरकी श्रीपादुकाजीको ओढनी स्वेत केसरीकोर
की आभरण मोतीके गोपीवल्लभमे पाटीया आरवे
मेदा ऽ४ घृत ऽ। खांड ऽ२॥ औरहु नित्यको राजभोग
आवे खीर खिचरी हु सीरा दूध ऽ२। खांड ऽ। मख्नी
नकूदरा भोईलार बड़ी पापर और आजश्रीविठ्ठ
लेशजीको जन्मदिवस है सो सामग्रीसेवके लडुआ
आधिकीमे आवे मेदा ऽ२ घृत ऽ२ खांड ऽ४ और
औरछाछबड़ा पिठी ऽ॥ घृत ऽ। मीठेशाककी खांड
ऽ॥ इतनो राजभोगमे आरोगे औरहु वानित्यको स
मयभये भोगसराय आचमन मुखवस्त्र कराय बीड़ी
आरोगाय सिंघासन पर पधराय मल्ला फूलकीपह
राय झारी फेरि भरिके फेर रंगकचोकी ऊपर प्रसन्नकेसा
न्निध्यमेन रखे पंखा न · चंदनगादो घीसिके कटोरीमे
धरीये केसरिकको अधिवासनकीजे आद्योत्पारि
देशकाजो संकीर्त्य भगवत्पुरुषोत्तमस्यचं
दनलेपनार्थे व्यजनव्यजनार्थे चंदनव्यंजनयो
अधिवासनकरिष्ये यह कहि अक्षतजल छोडीये
धूपदीपकरि गही वराकी कटोरीमे धारि तुलसी संख्यो
दिककीजिये फेरचंदनघिरकीये कुंआ कल कुंजापास

फेरआरतीउपेकीनिम्पकीवाती २ प्रगटकरिकीजै
न. धरीये पाछेटेरावोलिये, पाछेटेराखोलिदंडवतकरिके
६३ जरघंटावाजे प्रभुनकोचंदनपहरावै्ये पेहेलेगोली २ चं
दनकी चरणारविंदपेदोऊपरसमर्पिये पाछेवक्षस्थल
में चंदनकीगोलीसमर्पिये फेरगोलीदोयकरिकेपाछे
दोऊश्रीहस्तनऊपरचंदनकीगोलीसमर्पिये श्रीस्वामि
नीजीविराजतहोइतोदोऊचरणारविंदपरचंदनकीगो
लीसमर्पिये पाछेतरेपंखाकरीये पंखादोऊनकीया
पाछेधराये मांटीकीझारीभरिधरीये स्वेतवस्त्रलपेटिके
आगेधरीये करवामांटीकोस्वेतवस्त्रजपेटिजलभ
रिऊपर पालाढांपिये सैयापासधरीये झारीभरीतथा
चंदनकी कटोरी अक्षयत्रतीयाते ठाकुरपास आगजा
कीवरारी सांझसवारेरहे सोदोठभादोवदी ७ तांई रथया
त्रालोंपाछे मेहकी झड़ीवोहेतहोई तादिनएकविरियार
हे और गुलाबजल सैयापरमेहहोयतवनहीछिराकि
ये और परात्रा भरके भादोवदी ७ तांई आवेगे और
रथयात्राभरे पाछे दार अथवा मगजोउत्थापनमेंअ
क्षयत्रतीयासोभीजी आरोगतहोइ सोरथयात्रातेछो
कीआरोगे सोभादोवदी ७ तांई और कुंजाकरवाडीक
रवा माटीके अक्षयत्रतीयासो सिंघासनपर त.सिज्यापा
सरहे सोभादोवदी ७ तांईरहे भोगआवेतबउठाइधर

नो दर्सनरखुलेतबपासरहे अबउत्सवभोगकीसा
मग्री सखड़ीमेदहीभात साठीकोरवाऽ॥ दही
ऽ१ सनुवाघोस्चोऽ॥ घृतऽ॥ बूरा ऽ१ केरीकोस
धानत तथौंनकीकटोरी अनसखड़ीमें बीजके
लडुवा बीजऽ। खांडऽ॥ पराग मिश्रीकोमिश्रीऽ।
हांडीकोदूध ऽ२५ बूरा ऽ= सखड़ीमें दहीकी
नोनमिरचकीकटोरी त· तरमेवाजोहोयसोफेरि
धूपदीपकरि तुलसीसमर्पि संखोदिककरीये टेरा
दैबाहिरबेठीये समयभरेभोगसराय आचमनमु
खवस्त्रकराय बीड़ादेई आधिकीमें बंटाधरीये झा
रीभरीये माला पहराईये साजसबमांड़िके आरती
मोतीकी रूपेकोदीबड़ाधरिकरीये और उष्मनावेहो
तनहोइतो चंदनवक्षस्थलकोवड़ोकरीये अरगजा
कीकटोरीमेधरीये औरपंखासैयापासधरीये
अनोसरकरीये उत्थापनतेंपहले ... त्या
रोगे वादिन संध्याभोगमें छाकीअंकुरीआरोगे औ
रचोथते उत्थापनमेंभीजीदार नित्य आरोगेफिरनो
मंगकीरएकदिन चनाकी ऐसे सोठेठरथयात्रातांई
औरपरगा आरोगे अक्षय तृतीयाते सोठेठजन्माष्ट
मीकीईसप्तमीतांई आरोगे औररथयात्रातेछाकी

न॰ ६४ दार न॰ एकदिन छोकेमूंग आरोगे सोजन्माष्टमीकेपेहे
लेदिन सप्तमीपर्यंत वैसारवसुद॥ ७॥ भाईश्रीगोवर्द्ध
नजीकोजन्मदिन गोपालवल्लभमे बूंदीकेलडुवा बे
सन ऽ२ घृत ऽ२ खांड ऽ६ और नित्यको वैसारव
सुद॥ १३ कोदिन श्रीबालकृष्णजी मदनमोहनजी
रमेविराजे सोपाट उत्सव आप्पा वागावस्त्र केशरी
रुपेरी किनारिके कुल्हे केसरी संवत् १८७९ नावै
सारवसुदी १३ कोपाट उत्सव बीडा ६ मोटा बीड़ा १
नाना सेवके लडुवाको बड़ोवाल भोग मेदा ऽ३ खांड
ऽ६ घृत ऽ३ गोपालवल्लभमे सेवकेलडुवा मेदा ऽ॥।
घृत ऽ॥। खांड ऽ१॥ खीरसदांत्ते दूनी दूध ऽ१॥ बूरा ऽ॥
मीठे साककी खांड ऽ॥ हांड़ी मलड़ाको दूध ऽ५ बूरा ऽ॥।
सरवड़ीमे सेव आधो पाटीया मेदा ऽ१। घृत ऽ। खां
ड ऽ२॥ घोईदार नीनकूटा पापड़ वड़ी न॰ मीठोमान
चोरवा ऽ॥ खांड ऽ॥ मेवा ऽ।= घृत ऽ।= केसरतोला
आध न॰ सिरवरमे पान बेरवा ऽ॥ दही ऽ२ खांड ऽ२
सुगंध मासा २ इतनो आधिकीमे छाछकेवड़ापे
ड़ो ऽ॥ घृत ऽ। दही ऽ२ वासोदीको दूध ऽ२ बूरा ऽ॥
बरफीसुपेद पेड़ाकेसरी दूध ऽ४ बूरा ऽ१ राजभोग
को आरतीरूपेकोदीवड़ाधरिमोतीकी करीये रईजो

न नेन्योछावर फेरिनित्यकीरीति वेसा रवसदे।।२४
न्रसिंह चतुर्दशीको उत्सव केशरी पिछोड़ाकेसरीकु
ल्हे रुपेरी किनारीलगी श्रीस्वांमिनीजीको केसरीसा
ड़ी भीतर दोऊ वस्त्र केशरी श्रीबालकृष्णजीको के
सरी श्रीप्रभुसेमती किनारलगी केसरी कुल्हे नावेरि मुकुट
जगे महाप्रभुजीको श्रोढ़नी केसरी रुपेरी किनारी
की गोपीवल्लभमे सेवको पाटीया मेदा ऽ१। घृत ऽ।
बूरा ऽ२।। गोपालवल्लभमे सतुवाके लडुवा स
तुवा ऽ।।। घृत ऽ।।। बूरा ऽ१।। एकघोस्योसतुवा
आधिकीमे आरोगेगे सतुवा ऽ।। खांड ऽ१ राजभोग
मे नित्य आवे सोसंध्याआरतीलेंई नित्यकीरीतित
बकड़ी डबरा आरोगे सैनभोग आरोगे श्रृंगार बड़ान
होय सैनभोग आरोगे साय वाहर स्योकमे पाटपरगा
दी पधराईये परात मांड़ी पीटापर कुंमकुंमको अ
ष्टदलकमल करि पंचामृतको साज दूध ऽ१ दही ऽ।। घृ
त ऽ। बूरा ऽ। सहत ऽ= सबधरिके टेरा फेरि खोलि
ये प्रभुनसो आज्ञा मांगि सालिगरामजीको पीढा
परपधराईये झालर घंटा शंखनाद कीर्तन होई
आचमन प्राणायाम करि आक्षत जल हाथमे लेई
आद्येत्यादि पढ भगवत श्रीपुरुषोत्तमस्य न्रसिंह प्रा

न.
६५ दुर्भावोत्सबं कतुनिदं गत्येन पंचाम्रत स्नांन करिष्पे: यह संकल्प पढि जल अक्षत छोड़नो फेरि सालि ग्रामजीको तिलक करनो अक्षत लगावने चरणार विंद पर तुलसी मनमंत्र सो समर्पि अपरान बदेकरि पंचाम्रत स्नान कराइये प्रथम दूधसो फेरि दहीसो फेरि घृतसो फेरि बूरासो फेरि मधुसो फेर एक संख दूधसो एक संख सीतल जलको फेर चंदनसो रगड़ि स्नांन कराईये उहां ही फेरि शृंगवस्त्र करि ठाकुरके गादी पास पधराईये माला बड़े ठाकुरजीको पहराईये और पंचाम्रत कीने है उनको पहराईये और जन्माष्टमीको पीताम्बर उढ़ाइ सालिग्रामजीकूं तिलक हू पंचाम्रत स्नान कराए है उनको करनो अक्षत लगावने फेरि झालरि घंटा शंख बाजत ने रखनों टेरा देनो फेरि शृंगार ठाकुरको वड़ो करि के उत्सव भोग धरनों धूप दीप करि सखडीमें दही भात चोरवा सो मेर ... दही ऽ१॥ सधाना कीकटोरी अनसखड़ीमे मीठो शाक खांड ऽ॥ मिश्रीको पराग मिश्री ऽ॥ छुहारकी खीरि आधिकीमे दूध ऽ४ बूरा ऽ॥। जन्मसमय दूध ऽ४ ताको बूरा ऽ॥ सजुवा ऽ॥ घृत ऽ॥ बूरा ऽ१ उत्सवके भोगमे फलाहार

आवे तुजसोसंबोदिककनिकारीभारिधरीये देखदै

बाहिरआईये समयभरेभोगसराय मोतीकीआ

रती रूपेकोदीबड़ाधरिकीजे बीड़ा २ धरे ठाकुरना

नपेरिआरतीकीजे फेरिपोढाईये यासिहचतुर्दसी*

भरेलाय जोवेहोलोअभ्यंगआवे नवअभ्यंगको

पीबहत्रभकोधारकेटिकाने सिखरनभात आरोगे

गोपीबहत्रभकोमापकाविजेनो याहीभांतिरघया

नाके पेहले अभ्यंगनांई एकअभ्यंगमे सिखरनभा

त एकअभ्यंगमेदहीभात यारीतिसोअभ्यंगन

मेगोपीबहत्रभकीधारकेटिकांनेआरोगे बीचबी

चमेसनुवाराजभोगमे दूसरे तीसरे दिन आरोगेयह

रीति बैसाखवदी॥२ संवत १५५२ ॥श्रीगोकुलनां

थजीबाबा गादी बिराजे तेजन्मदिवस बालभोगमेवे

दीजलेबीनोबारो रसोईमे अरधपाटीया सनुवाप

कोड़ीकीकढ़ी इधधरमेह्ततमजड़ा॥ जेष्ठ वद॥

३०ऽमावस्या बलभोगमे सेरा ऽ१ बेसन ऽ१

घृत ऽ२ जेष्टमेजादिनमंदिरमेजान

भरे तादिन सखड़ीमेदेनो बेसन ऽ१ खांडकोरस

ऽ४॥ जेष्ठ सुदी ॥१०॥गंगाजीको न-यमुनाजीको

उत्सव॥ श्रंगारानित्यको कारेनपांहरेवस्त्रनही

न. ६६

वारकी खिड़कीकी अरगजाई पाग ओढनी अरगजाई हीरा
कीकलंगी नयां आभरण हीराके गोपीवल्लभमेंनित्यआ
वेसो और राजभोगमेंठाकुरकी चोकीपास दूसरीचोकी
बिछाय रुईके गदेलाकी गादीबिछाइ पाछे तकीया धरिके
रिफलीको केसरीसाड़ी अथवा अरगजाई सारीचोलीवि
नाकिनारीको चोनके गदेलापासधरीये भावनाकरिकेटी
कीनं-सिंदुरधरीये फूलकीमालापहराईये सोभाग्यवं
तीवल्लभवेठी टीकीन-सेंदुरधरावे फेरअरगजाछिरकिये
आरसीदिखाईये पंखापासधरीये अरगजाकीवराधि
रीये झारीभरिधरीये फेरभोगधरीये सखड़ीमेदहीभात
साठीचोखा सेर ऽ॥ नामेदही ऽ१ घोल्योसनुवा ऽ॥ घृत ऽ।
बूरा ऽ१ संधानों न-लोंनकीकटोरी अनसखड़ीमेसुहा
रीपोरी न-रुपेत्त मिलिके मेदा ऽ१॥ घृत ऽ।।। मंडिखूँको
मेदा ऽ१ घृत ऽ१ खांड ऽ१ काठेचनकोरवाकोसीरा
रवा ऽ॥ घृत ऽ॥ खांड ऽ॥ गुजरातीखाजाकोमेदा ऽ१॥
घृत ऽ१॥ बूरा ऽ१॥ मेदेकोमाककीखांड ऽ॥ याहीमेंगो
पालवल्लभ-आइगयो अन्योमेवा वदाम न-चिरों
जी न-खरबूजाकेबीज न-कोल्हाकेबीज न-नरमेवा
इतनो आवे मिश्रीकोपरगाकीमिश्री ऽ॥ नयांतरमेवा
याभांति दोऊठोरभोगधरनों फेरधूपदीपकरीये तुलसी

संबोदिककरिटेरादे बाहिरआयसमयभरेभोग सराई
आचमनमुखवस्त्रकराइ बीड़ा २ श्रीयमुनाजीकेहां
धरि फेरिठाकुरकोसिंघासनपरपधराईये ओरश्री
जमुनाजीकोदंडवतकरिके एकछाबलेकेवामेसाड़ी न-
चोली न-बीड़ामाला न-आरगजाकीबरनीधरे पंखा
न-आरसीसहासैयामंदिरमे सैयापास २ चोकीपरआव
धरनो उत्थापनसमेछाबमेते साड़ीचोली मुटराजीपे प
धरावनो उत्सवकीविधिसमाप्तं ॥ जेठसुद ॥१५॥ प्र
थम स्नान यात्राकोउत्सव ॥ सोजेष्टानक्षत्र उदयात्
जादिनाहोई तादिनस्नानयात्राकोउत्सव पेहेलेदि
नराजभोगपाछे अथवा सेनभोगधरिके आपुनमो
ठोजललाईये पाछेमंदिरकीतिबारी खासाकरिके उ
हांचोकपूरि अष्टदलकोरंगहरदीकोकरिके तापर हांड़ा
धरिये जलजारेहोइ सोबाहांड़ामे नरगछन्नामेछां
निकेभरिये न-जमुनाजल वाजलमे केसरघोरिके
डारिये ओरराय[illegible]जुहीकेफूल न-चं
मेलीकेफूल न-तुलसीडारिये छन्नाऊपरबांधिये
जलमीठो हांड़ामे छांनिकेभरनो फेरश्रीयमुनाजलहां
ड़ामेपधरावनो फेरगंगाजलपधरावनो पेहेलेह
लदीकोचोकपूरि हांड़ाधरिके हांड़ाकोकंकुलगावनो फेर

न-
६७

जलभरनो फेरकेसर न-राइबेलकेफूल न-मोगराजईजु
ही पीलचमेली न-तुलसीडारिके फेरिअधिवासनकरनो
आद्येत्यादि पढिके भगवन श्रीवरुणो नमस्या जेष्टा
भिषेकार्थे जलस्याधिवासनं करिष्ये यापढिजल
जलअक्षतछोडिये फेरजलकेहंडाकोवंदनकरनो
और हांडामेजल पधरायके जमनाजल न-गुलाब
जलपधरायके संकल्प करनो भोगधरिके धूपदीपक
रनो फेरि आरती करनो धूपदीपकीजे फेरगदीको
कटोरीमेधरिये फेरतुलसीसंखोदककरिये फेरग
दीकोभोगसराइ नित्यकी आरतीमेवाती २ दोय ४
प्रगटकरिके आरतीकरिये फेर दूसरेदिनवेगिउठिये
मंगला आरतीभोगीकीकरि ठाकुरके आगे अभ्यंग
कोरीहरदीकोकरीये तापरपरातमांडि परातमेपीढा
धरि तापरसुपेदवस्त्रबिछाय स्नानकेलीयेजलको
हंडा न-लोटा पासधरीये स्नानकेलीयेशंखधरीये
फेरिटेरादै ठाकुरकोस्नान करवायेपीत धोतीउपररागसु
पेदजनोई याभांतिउढाईये श्रीवालकृष्णजीहोइतो
पाटकेपासचोरसा आडोकरनो श्रीकंठमेलडु १ श्री
हस्तमेकडा सोनेके कटिमेधोतीचरणारविंदमेनूपुर
और बालकृष्णजीहोइतोकछूनपहेरे फेरठाकुरको

स्नानकेपीढापरपधराईये दर्सनखुले नवधान्चमनप्रा
राणायामकरि हाथमेअक्षतजलनलेई अघेत्यादीपाटि
केभगवतश्रीपुरुषोत्तमस्य जेष्टाभिषेकंकरिष्ये इति
संकल्पकरि [illegible] तिलक २वे
रकरि [illegible]
[illegible] उतरसुरत्ना
पुनवेठीये दूसरेजन रगकलोटीन्ने संखमेजल
डारे घंटाझालर संखनांद हुयेन ठाकुरस्नानकरे
ब्राम्हण पुरुसूक्तपढे तहांलांई स्नानकरे फेरपुरु
षसूक्तसंपूर्णभयेटेरादीजेधोत्ती उपरणावड़े कीजिये अं
गवस्त्रकरीये श्रीस्वामिनीजी विराजत होइतो ठा
कुरस्नान करिचुकेटेरात्प्रारंग्पाछे । नित्यकीरीति
सोस्नानजोटीसोकरे जलहांडाकेमेस्रं फेरपिछो
ड़ानम्योकेसरकेछापाको कुलहीस्वेतकेसरकेछा
पाकी श्रीस्वामिनीजीकोसाड़ीस्वेतकेसरकेछापा
कीनालद्वाम्पजीको [illegible]स्वेतकेसरकेछापाको
कुजहीस्वेतकेसरकेछापाकी पादुकाजीकोओढ
नीस्वेत केसरकेछापाकी श्रृंगारभयेपाछेगोपीवल्ल
भकेसंग उत्सवकोभोगनाधावे अपनेघरमेराजभो
ग केसंगउत्सवभोगआवे वड़ेवालभोग सनुवाके

न॰
६४

लडुवाको सतुवा ऽ३ घृत ऽ३ खांड़ ऽ६ सेनमेवंटातांई
आरोगे अबउत्सव भोगकी विगत बीजके लडुवा बी
ज ऽ१ खांड़ ऽ२ चिरोंजीके लडुवा चिरोंजी ऽ१ खांड़
ऽ२ नं॰ मिश्रीकोपरागा मिश्री ऽ॥ खांड़ ऽ॥ परागकी
मीठोशाक खांड़ ऽ१ इंद्रैमान ऽ कोदूध ऽऽ [illegible] ऽ॥।
खीरइनीनित्यने दूध ऽ३॥ खीरको नामधरा ऽ॥
गोपाजवल्लभमे बूंदीकेलडुवा वेसन ऽ॥। घृत ऽ१
खांड़ ऽ२। चिरोंजी भंजिवेकी ऽ॥ मूंग ऽ६ अंकुरीके
नामेंसोसेर ऽ१ छोंकिवेकोमोरवनों याहीमेतेसंध्या
समय मुंगछोंकके भोग आवे भोगकी अंकुरीमे खो
परा कतरिकेनांखनों सरवड़ीमे गोपीवल्लभमे
आरवोपाटीया सेवकोआवे मेदा ऽ१। घृत ऽ। बूरा
ऽ२॥ दहीभातकेचोरवा ऽ॥ दहीसेर ऽ१ घोस्चोस
नुवाराजभोगमे सतुवा ऽ॥ घृत ऽ। खांड़ ऽ१ धूप
दीपकरि तुलसीसखाँदिक करि देराद वाहेर आई
ये समयमरगभोगसरायआचमन मुखवस्त्रक
राय आरतीमोतीको रूपेकोदीवड़ाधारिकीजे सं
ध्याभोगमे छोंकी अंकुरी आरोगे॥ असाढ वदी ३०
ऽ मावस्या श्रीगिरिधारीजी श्रीगोविंदजीके लालजी
कोजन्म उत्सव येउत्सव अपने यहां नहीं मांन्योजाय

गोपालवस्त्रभमेसेवकोपाटीया आधोमेदा ऽ॥= छ

तेऽ= खांड १ सिखरनभात्तकेचोरवाऽ॥ सिख

रराग ऽ१ बूरा ऽ१॥ धोवादार तीनकूंदावडीपापड़

आमकोघेलमाया खांड ऽ॥ मीठेशाककोखंड

ऽ॥ जलेबीकोमेदा ऽ॥ घृत ऽ। खांड ऽ१॥ श्र

दीघरवां बेसन ऽ॥ घृत ऽ॥ खांड १ श्राधके

वड़ाकीपिठी ऽ। घृत ऽ= बदत्तीमेखीरिकोदू

ध ऽ२॥ त्तामेबूरा ऽ॥ हंडीमजडाकेदूध ऽ४

त्तामे बूरा ऽ॥। मंगलाकीआरत्तीमोतीकी त-रा

जभोगकीआरत्तीमोतीकी रथयात्राके सबेरे ता

पाछेछेलेभोगकीआरत्ती मोत्तीकी तापाछेसेनमे

खुलेरथमेविराजेसोआरत्तीमोत्तीकीहोई प्रसाद

सुदी २ तयांनीजजादिनाउदयात्त पुष्यनक्षत्रहो

ई तादिन रथयात्राको उत्सव पहेले रथकोकाडूं

डु साज तलाई रानीहे पिछवाई चंदोवासिंघासन

वस्त्रस्वेतकारचोबीके अथवा चिकनकेनिजमंदि

रमेओरडोलतिवारीमेपिछवाई चंदोवालालम

खमलके अथवालालअत्तलसको ओररथको

ठालर रेसमीकीनारीकीनेधहेडोराकोवधे ओरर

थमेगादीतकियारहे तेनकोसुपेत्तखोलीनरहे सि

न. ६८ सिघासनपरविराजे सुपेदखोलीरहे सिंघासनपरबेरा
जै सुपेतखोलीरहे रसीरीगते है सैयाके ओढवेकी
चादरचिकनकीरहे सवेरेबेगिउठीरे अंपंगस्वेत
वागेजामदांनीको अथवाभीतर सुनेरीबादलाकेबूंटी
कोचाकदार सुनेरीकिनारीलगी चिकनको अथवाका
रचोबीको स्वेतकुलहीभीतर चित्रकोनारीके अथवा
लेपटुकाजाल श्रीस्वांमिनीजीकोसाडीस्वेतचिकनवा
कारचोबीकीकिनारीलगीभीतर दोऊ वस्त्रलाल श्री
वालकृष्णजीकेवागाचिकनवाकारचोबीकोकुलही
सुपेद चित्रकी ओढनीस्वेत पावुकाजीको ओढनीस्वे
त चिकन अथवा कारचोबीकी आभरणमेंगाकं
के न. हीराके चंद्रकाकोजोड़ सादाको ५ को अवध
डेवालभोगमंगलात्तेलेके सेनके वंटा नांई सतु
वाको आरोगे सतुवा ऽ३ घृत ऽ३ बूरा ऽ६ गोपा
लवल्लभमेंमेवाटीकेलडुवा मेदा ऽ।।। घृत ऽ।।।
मेवा ऽ।।। मिश्री ऽ।।। बागिवकीखांड़ ऽ।।। सेवको
पाटीया आखो मेदा ऽ१। घृत ऽ।= खांड़ ऽ२।। सि
खरनभात चोरवा ऽ।। सिरवरन ऽ१ बूरा ऽ१।। द
हीभातके चोरवा ऽ।। दही ऽ१ धोवादार तीनकूटा
वड़ी पापड़ मीठो श्याककीखांड़ ऽ।। इतनो अधिकी

छाछके इवरा राजभोगमें त- उत्सवके तीन्योभोगमें आवें धूपदीप करि फेरि बाहेर आइ रथचोकमें तिवारी पास उत्तर मुखरहे है उहां अधिवासन होई ठाकुरचोकमें बिराजे रथमें भोग २ चोकमें आवे फेर रथ जलाइके गोलतिबा जे
रीमें आनो दक्षिणमुख रखनो नीमरभोगइगोलतिबा रीमे धरनो आवे मंदिरकी तिबारीमें दक्षिणमुखरथप धराय फेरि अधिवासनकरीये आचम्य प्राणानायम्य देशकाजौ संकीर्त्य जल अक्षत लेइ भगवतश्रीपुरुषो नमस्य रथारोहणार्थे रथाधिवासनंमें हं करिष्ये इ ति संकल्प करिके जल अक्षत छोड़नो फेरि धूपदीपर थको करनों फेरि चंदन लगाइ कराकीगही भोग धरनों तुलसीसं रवोदिक करनों फेर आचमन कराइके आरती रूपेकी बात्ती २ प्रगट करिके धरनी फेर समय भरभोग सराय आचमन मुख वस्त्र करि बीड़ी आरोगायासिंघा सनपर प्रभुकोपधराय साज सब मांडि फूलकी माला पहराई आरसी दिखाइ आरती की रूपेकोदीवा धरि कीजे पाछेसांतरघंटा बाजत प्रभुनको रथमें पधा राइये बेणुबेत्र साहित मुखवस्त्रनयोरहे कारिभरिध रीये राजभोगकी माला पहरे होय सो मालाजवरथतेउ तरे तबबड़ीहेई तहां तांई वहीमाला पहेरे रहे और रथमें

न-
६० विराजे सोपेहेलोभोग मंदिरके चोकमे आवे उत्तरमुख
दूसरो भोग मंदिरके चोकमे आवे उत्तरमुख और तीस
रो भोग डोलतिवारीमे विराजिके दक्षरामुख भोग आवै
पेहेले मंदिरकी तिवारीमे विराजे उत्तरमुख थोडी बिरी
यां दसमें होई [illegible] भोग आवे चोकमे [illegible] भोग
सरे आचमन मुखवस्त्र कराई [illegible] बीड़ा २ धरि
दर्सन खुले फेरि टेरा दे धूपदीप करि उगरी भरि भोग धरिये
तुलसी संखोदिक करिये समय भये भोग सराय आचम
न मुखवस्त्र कराइ बीड़ा ४ धरिये दर्सन खुले कीर्तन होई
चोकमे हीं टेरा आवे ठाकुर को रथ डोलतिवारीमे दक्षरा
मुख विराजे उगरी भरि धूपदीप करिये तुलसी संखोदि
क करि टेरा दे बाहेर निकसिये समय भये भोग सराइ
आचमन मुखवस्त्र कराइ छेले भोगमे बीड़ी २ आरो
गावनी सिखोरीमे रथके पास बीड़ा ८ तीसरे भोगमे बी
ड़ा ८ तामे बीड़ा ४ तो दक्षरा हस्तकी ओर धरने और
बीड़ा ४ बांम हस्तकी ओर धरने बीड़ी २ छेले
भोगमे आरोगे फेरि आरती मोतीकी रूपेको दीवड़ा
धरि करिये पाछे न्योछावर नथां राईलोन करिये अ
बरथके भोगकी सांमग्री लिखे हैं गंराकोकूर ८२॥
ताकेमेदा ८३ घृतकूरको तथां भुजिबेको सेर ८५ कू

६०

रकीरखांड ऽ २॥ सेवकेलडुवाकोमेदा ऽ२ घृत ऽ२ खांड

ऽ४ मठडीकोमेदा ऽ२ घृत ऽ२ खांड ऽ२ छटवा

वंदी वेसन ऽ२ घृत ऽ२ खांड ऽ१॥ सिखरनवडीकोमि

लवापिढी ऽ। घृत ऽ= पागिवेकोखांड ऽ१॥ सिखर

रा ऽ१॥ वरासिखरनको ऽ१॥ मेठेशाककोखांड ऽ॥

बीजकेलडुवाबीज ऽ१ खांड ऽ२ चिरोंजीकेलडुवा

चिरोंजी ऽ१ खांड ऽ२ पागाकीमिश्री ऽ१ खांड ऽ१ प

गाकी छाछकेवडाकीपिढी ऽ१ घृत ऽ॥ मूंग ऽ७

मूंग सेर ऽ१ छोकिवेके उत्थापनभोगमे छोकीअंकुरी

खोपरीकीवटी १ दूधघरकीसांमग्री पेडाखपेद

दूध ऽ२॥ बूरा ऽ॥ बरफीकेसरीकोदूध ऽ२॥ बूरा

ऽ॥ केशरमासा २ बासोदीकोदूध ऽ३ बूरा ऽ॥ दही

मलाईकोदूध ऽ४ बूरा ऽ॥ खीरिकोदूध ऽप्राधिकोमे

सेर ऽ२॥ बूरा ऽ॥ नपां तरमेवासवलरहके कटोरीस

धानाकी इतनीसांमग्री रखकोहे तामेतेभोगदोर

मे थोडीथोडी रूपासे भ्यारछेलभोगमे सबआवे तामे

ते बडीसांमग्रीसेवकेलडुवा नमोट न० गेला न० छट

वांवंदीसरवतनो सोरध्यात्राने लेकेदूसरेदिनमंगला

नेलेकेसेनकेवंटात्तगई यह चार सांमग्रीरवीचडी

कोऽप्रारगे बाकीसबसांमग्रीभोगमेधरिदेनो दूस

न. ७२ रेदिनगोपालवल्लभयाहीमेतेआरोगे तीसरोभो
गसराइबीड़ी २ आरोगायबीड़ाधरेआरतीमोजी
कीकरीये न्योछावरराईनोंनकरिप्रदक्षणा ३
करिदंडवतकरिरथकुंमंदिरकीतिबारीमेपधराईये
फेरिदंडवतकरिप्रभुनकोश्रृंगारबडेकरिवेकोचोकीपर
पधराई वागा न. सूथन न. भारी आभरणबड़ेकरि
पिछोड़ापहराईये सूक्ष्मश्रृंगारकरीये श्रीस्वामि
नीजीकोबड़ेहारहोय सोबड़ेकीजियेछरीकोसिरि
धरीये सिंहासनपरप्रभुनकोपधरायबीड़ाराजभो
गकोहीवंटारहे सैयाकोसाजसबमाड्योहीहेपेड़ोवि
छायअनोसरकीजे उत्थापनमेपनाधरेधोईदारनही
धरे संध्याभोगमेछोकीअंकुरीआरोगे सेनभोगस
रेपाछेचोकमेंछत्रीकाढिकेखलेरथमेठाकुरविराजे
खलेरथमेठाकुरकोसेंनआरती होइकेफेरपोढे २
थयात्राविधीसम्पूर्ण ॥ आषाढवदी १ ॥ धनिष्ठामे
डरूकोउत्सव [illegible] पिछोरा न. पागधरे
स्वामिनीजीकीसाड़ीकसूमलभीतरदोऊवस्त्र
हरे आरतीमोतीकीकमरमाछट गोपालवल्लभ
भमेमनोहरकेलडुवा मेदाचोरीठामिलके ऽ॥।
घृत ऽ॥। खांड ऽ२॥ मीठेशाककोसखांड ऽ॥ हांडी

मलड़ाको दूध ऽ४ बूरा ऽ॥। छाछके वड़ा पिठी ऽ॥ स
खड़ी राजभोगमे सेवकोपाटीया आधोआवे मेदा
ऽ॥= घृत ऽ= खांड ऽ१। छड़ीयलदार न-कढी
ओरनित्य आवेसो आसा दसुदी। ११॥
सयनी र[illegible] सोमोतीके आगली कसेको दीव
ड़ाधाई मास ४ ताईनित्य राजभोगकी आरतीमोती
कीकरनी असाढसुदी॥ १५ प्रस्यो अभ्यंगनही
मुकट मोतीको काछनी लाल — —भीतर सुपेद टव
काकी चन्द्रीकी तापोपुरकी ओरकाछनी वालक्र
ष्णजीकी लाल हुंदा सुपेद टवकीकी ओढनी आ
भरण मोतीके स्वामिनीजीको साड़ीके सरभीतर
वस्त्र लाल गोपालवल्लभमे लाटाके लडुवा चिरोजी
सेर ऽ॥। बूरा ऽ१॥ मोहनथालकी खांड सेर ऽ॥ कचो
रीफीकीको मेदा ऽ१ पिठी ऽ१ घृत ऽ१ सखड़ीमे
सेवको आधोपाटीया मेदा ऽ॥= घृत ऽ= बूरा ऽ१
धोवादार ओरसखड़ीपको आवे रा[illegible] द[illegible] को
श्रीबालकृष्णजीको पाट उत्सवहै न-काकाजीश्री
विठ्ठलरायजीको जन्मउत्सव तथा तीजके दिनाहि
डोरा विराजे, सांझकोभद्रा है इतो सवेरे श्रृंगार भये पी
छे अथवा गोपीवल्लभ भोगसरी तब कड़ीगवालके
सो श्रीठाकुरजीकी छबरासिहैं सोचंद्रमा आछोहोइ दूजनथांतीज
कोभद्रान होई तादिनाहि डोरा विराजे

न. ७२ तथां इवरा आरोगीके विराजे ओरसांजकोपोरी खुले संध्या
आरतीहोई तबकडीग्वालनकी आरोगी इवरा आरोगीके
ओर गादी तकिया पर सुपेदी रहे तसेवस्त्रकीसोरमखी को
उतरे सोफोरिजन्मोत्सव श्रंगपाछे रखादतीकोत्त्वटे

ओरसबेरेभट्ठहोई तबसांजकोसंध्या आरती होई ग्वा

लकीतबकडी तथां इवरा घरिके हिंडोरा विराजे ओमगा
हूयेलाल कसूमल वस्त्र पिछोड़ा तामे सुनेरीकिनारीलगी
ओरलाल कसूमल पाग हरीरविड़कीकी तनियां कशमल
श्रीस्वामिनीजी को साड़ीकसूमल किनारीसुनेरी लगी
भीतरदोऊवस्त्रहरे श्रीवालकृष्णजीकूं पाग कशमल
ओढनी कसूमल किनारी सुनेरी लगी श्रीपादुकाजी
को ओढनी कशमल किनारी लगी सुनेरी पिछवाई-सि
घासन न-चंदोवा येसबकश्मल सेपाकी चादर कश्मस
ल श्रृंगारमे आभरण हीराके हस्त न-त्रवलधरे क

नफूल हीराके दुलरे धरे दोऊ करमे सीसफूल हीराको
चंद्रका १ सादाधरे हीराकीकलगीमे सैयासोनेके पा
याकीरहे तम्मूटाजीकी चोकी सोनेके पायाकीरहे वी
डाकोघंटा सोनेको आगजोकीवरनी ऊपरवस्त्र ढांप
नोनहीं श्रीराहिडोरा केनीचे वनाती आसन अपनेघर
मोबिछे हे ओरगोपीवल्लभमोनित्यआवेसो गोपा

लवटत्रभमेबूंदीके लडुवा कोवेसन्न ऽ॥। घृत्त ऽ॥। खांड
ऽ२। मीर्चे शाककीरखांड ३॥ राजभोगमे सेवकोपाटी
या त्र्याधो मेदा ऽ॥= घृत्त ऽ= त्ररा ऽ१। धोबादार
ओरनित्यत्र्यावेसो अबहिंडोरा आगे होरगेपरायो
होई [illegible] कीजे जादिना हिंडोरा बिराजे
आचम्य प्राणानायम्य करिजलअक्षत हाथमेलेइ अस
धेत्यादि पाठि भगवत्त्रीपुरुषोत्तमस्य हिंडोलादोल
भाष्ये स्याधिवासनं करिष्ये यहपढिजलअक्षतहाथ
मेलेनारबनो फेरिहिंडोलाकीडांडीनके खंभंरवभनदो
चंदनलगाबनो फेरिगटीकीकलेरिघारिधूपदीपकरि
उत्तसीकटेरिबेनांरविके फेरिमहामंत्रसोसंरवोदिककर
नो फेरिआचमनकराइनित्यकी आरत्तीरूपेकी २
बातीप्रगटकरि एकहाथमेघंटा ओरएक हाथमेआर्ती
राषिकेकरिये हिंडोलाकोगदीसरगइलीजे फेरिता
लरिघंटा शंरव बाजतभगवत्तकोहिंडोलापरपधराइके
पीठकको तकियाधरिके अपाधरिये ठादेस्व
रूप होइतो बेरगुवेत्रसहित हिंडोलामे पधारे फेरधूप
दीपकरिके हिंडोलामेभोगआवे सक्करपाराकोमेदा ऽ२
घृत्त ऽ२ खांड ऽ२ न-कलेरी १ केरिकेसधानाकी
उत्तसीसंरवोदिककरिदेरगदे वाहिरनिकासिकीर्त्तनीयां

न- कीर्तनकरे हिंडोरनांहोरोप्योनंदस्प्रवासभोगसरेनहुंतांई

फेरिसमयभरेभोगसरायप्रायमनगरवक्लाकरई फूल

कीमालानई होइतोफेरिधरावनीनहोइनोभोगकीमा

ना रहीप्रावै फेरबीरा २ होयभरने पलीरीनिसोहि

उनबीदुगनिपदेपपडीकोमेरहे मेसनभोगकेवी

रा ४ मेत्तेधरे दूसरेबीराजिल्परहे नही कारबीराकिमेते

रहे छोटेराप्रावे फेरश्रृंगारबडोहोई पाछेदर्शनखुले

कीर्तन ४ पेहलेदिनगोविंदस्वांमीके गायेजांय यह

रीतिहे फेरिटेराप्रावे फेरश्रृंगार बडोहोई सेनभोगमावे

भोगसरायसेनप्रारतीकरि पोढईयो। श्रावणशुद २

२ तादिनाश्रीवालकृष्णजी रजोसत्वरागीकेयहांतेश्री

वल्लभजीवडे लालजीकेमां पधारेहे श्रोरकाकाजी

श्रीविठ्ठलरायजीकेजन्मउत्सवहै सांमग्रीराज

भोगमेजलेबी न-मीठोपपाकखरवडीमेसेवकीपाटी

याश्राधी खरवडीमे तथाधोवादार न-बीन्हुला न-पा

पड वडी इतनोप्राधिकीमेरूपाको हिंडोराबिराजिवे

कोमहूर्तप्रावे नयलोकसुवलवस्त्रधरे श्रोरहिंडो

रा १ दिनप्रागेपिछेविराजे नवद्रुजफेनीवुप्रारंगके

वस्त्रधरे श्रीमस्तकपरकलइधरे प्राभरणहीरानं

राकेधरे श्रोरठाकुरजी हिंडरामेति पितृ थाहोई श्राछे

मुहूर्त होइ तादिना ठाढे स्वरूपको वेरागु धराय आरतीमोतीकी
रूपेको दीबड़ा धीरकीजे फेरिराईलोंन न-न्योछावरक
रीये फेरिपरिक्रमा करि दंडवत करिये प्रभु उतरे तादि
नाहुं गोविंदस्वामीके हिंडोरा ध गाये ता आरती भये आ
सीसगावे श्री व रावदि॥२ कौ रजोदस्त्रारागीके घर
ने काका श्री वल्लभजीके मंदिर श्री बालकृष्णजी पधा
रे है सो पाट उत्सव है॥ और काकाजी श्री विठ्ठलराय
जीको जन्म उत्सव हू श्रावण वदी २ को है। सो जलेबी
गोपालवल्लभमें आरोगे तथा सेवकेलडुवा श्रीबाल
कृष्णजीके उत्सवके दिन आरवे दिनको बारा दूदी जलेबी
आरोगे ताको विगत जलेबीको मेदा ऽ१॥ न-वेसन ऽ१॥
वंदीको गोपालवल्लभ याही में तें आवे चीनक्रंदा वड़ीपा
पड़ घड़ी पलदार श्रा ध रा सु द॥३ ठकुरानी तीज अ
भंग लालधरनो तामें तीन टवकी केसरी रंगकी पीरीरा
से चूनडीके वस्त्र पिछोड़ा न-पाग ऐसी चूनडी स्वा
मिनीजीको साडी [illegible] उ वस्त्र हरी टक
की जाल ऐसी चूनडीकी धरे श्रीबालकृष्णजीके श्रो
ढनी कसूमल धरनी तामें तीन टवकी को फूल पीरेरं
गकी ऐसी चूनडीकी पाग ऐसी चंदडीकी श्रीपादुका
जीको फूलपीरेरंगकी ऐसी चूनडीकी श्रीपादुकाजी

न. ७४ कोऊ चनडीऐसो ओढनीको पागहू ऐसीचुंनडीकी

आभररागहीराके गोपीवल्लभमे नित्यको राजभोग

मेसांमग्रीचिरोंजीकेलडुवा चिरोंजी पाव ऽ।= खांड

सेर ऽ१। मीठेशाककीखांड ऽ॥ हांडीमजइाकोदूध ऽ४

बूरा ऽ॥। [illegible]कोबेसन ऽ॥ घृत ऽ॥ खांड ऽ२।

दारबपैसा २भर मिश्रीकोकरणो ऽ= सुगंधमाला ऽ२

कंदीकेलडुवाभेनारखनो सखडीमेसेवकोपाटियाआधो

सेव ऽ।= मेदा घृत ऽ= बूरा ऽ१। धोवादारनपकोपीको

कदीइतनोआधिकोमे विधिसमाप्त: तीजकेदिनासं

रुकेगहिडोराखाटपिछे चारोलीकेलडुवाराजभोगमेआवे

आवरागवदी ६ केदिनश्रीदामोदरजीलालजीकोउत्सव

वस्त्रश्यांम न. हरेरंगकेनधरे कुंडलकोसिंगारहोई

श्रा रास ५ नागपंचमी आभ्यंगनांहीहोई श्रृं

गार वस्त्र श्याम [illegible] पुष्पकेरंगके पाघ न.

ओढनी गोपीवल्लभमे नित्यआवे सोराजभोग

मेगुलाल-गोपालवल्लभमे सेवकेलडुवाकेम्मेदा ऽ॥।

घृत ऽ॥। खांड ऽ१। मीठेशाकमेखांड ऽ॥ सेवकीखीरि

कोदूध ऽ३ बूरा ऽ॥ सखडीमेसेवकोपाटिया आधे

ताकेम्मेदा ऽ।= घृत ऽ= बूरा ऽ१। चिरोंजी ऽ= [illegible]ऽ।

घूलीकोरबा ऽ१ घन ऽ।। वूरा ऽ२ फराबोरीढा ऽ।।।
श्रा व रासुदी ।।८ भाईश्रीवालकृस्नजीकोउत्सव
वस्त्र चूंनरीके श्राधवालेहेरीयाके गोपालवस्त्र
भम्नेकुंडीन जालेकी स्सारोगे उत्तई स्नवडीमेनी
नक्रटाछुडयेलदारहतनो श्राछोकोमे श्रोरसबनि
स्नको श्राछनबगो न वस्त्रेदसके पिताको
उत्सव होई केसरमलकाछनीमुकट हीराकोवस्त्रमे
किनारीजमी श्रीवालकृस्नजीकेमुकटहीराकोश्रो
दनीकेसरमल ताकेहूंदामेरुपेरीकिनारीकोलेहेरीया
वडीकिनारीकोलया कालररुपेरीलगे पाडकाजी
को श्रोदनीकेशरमलरुपेरीलेहेरीयाहूंदामेफेरसंध्या
श्रारतीहोई उबर श्रारोगे तबकडी श्रारोगिकेपधारे
पेहलेहिंडोराको श्राधिवासनकरनो फेरठाकुरजी
कीगादीहाथमेलेई चालनीकेपगमंडा गुलाल न
श्रवीरके न हतीकेकरने फेरधनसामीऊपर
रातिके वगीचामेपधारे कीर्तनबाहिरहोई श्रोरठा
कुराहिंडोरामेपधारे तबमुकटहीराकोवडोकरिके ग
लाबकेफूलकोमुकटधरे टोपीहीराकीऊपर थपदी
पकोरिकारीभारे चोकीमांडिभोगधरीये ताकोविगत
सिखरनवडीकीपिठी ऽ।।= छूल ऽ।।= पागीवेको

न- खांड़ ऽ२ सिखरन ऽ२ ताको बूरा ऽ२ मांखनबड़ाको
७५ मेदा ऽ॥। घृत ऽ॥। मांखन सेर ऽ॥ बूरा ऽ॥। चंद्रकला
कोमेदा ऽ१ घृत ऽ१ खांड़ ऽ३ फीके गंका चोलाके ही
ग मिरच आदा नारियके करने मेदा ऽ॥। घृत ऽ॥। मे
दाकी पूरीको मेदा ऽ॥। घृत ऽ॥ चणाकी दालफड़िया
सेर ऽ॥ घृत ऽ। चणाकी दालके पड़फड़ीया ऽ॥ घृत ऽ।
मीठे शाककी खांड़ ऽ॥ खीरिको दूध ऽ३ ताको बूरा ऽ॥
पेड़ा होयतर हके दूध ऽ४ बूरा ऽ१ केसर मासा ४
बरफी होयतर हकी दूध ऽ६ बूरा ऽ१ केसर मासा ४
हांडीमलड़ाको दूध ऽ५ बूरा ऽ॥। मीठेदहीको दूध ऽ६
ताको बूरा ऽ॥। गोपालवल्लभमे मनोहरके लड्डवा मे
दा चोरिठा मिलिके ऽ॥।= घृत ऽ॥।= खांड़ ऽ२॥ छाछ
के बड़ाकी पिठ्ठी ऽ॥ घृत ऽ। न- सधानाकी कटोरी औ
र तर मेवा होइ सो आवे फेर सर्वत्र तुलसी महामंत्र
सो समर्पिके शंखोदिककरिये टेरादेवा हिर आइये
समयभरे भोग सराय आचमनकर वस्त्र करग बीड़ी
१ = आरोगाए फेर तबकड़ीमे सरवोरिमे बीड़ा नग १०
धरिके दर्सन खुले कीर्त्तन होइ फेर आरती मोतीकी त
पेको दिवड़ा धरिकीजे फेर राई लोंन न- न्योछावर की

जे औ खत्रन को प्रसाद उपराँत कीर्तनीयाके मुखो